मूल्य ₹ 75

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

मार्च – अप्रैल, 2018

46वीं डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस

www.indairyasso.org

गोकुळ®

एक दुग्ध सरिता...

जो बहती है गहरे सागर की तरफ,
चल पड़ती है संपन्नता की ओर
दूध उत्पादक एवम् किसानों को लेकर।

विविध पुरस्कारों से सम्मानित...

राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार : १४ बार

महाराष्ट्र राज्य सहकार भूषण पुरस्कार : ३ बार

महाराष्ट्र ऊर्जा विकास अभिकरण (महाऊर्जा) पुरस्कार : ४ बार

डी. व्ही. घाणेकर (कार्यकारी संचालक) | संचालक मंडळ | विश्वास नारायण पाटील (आबाजी) (चेअरमन)

कोल्हापूर जिल्हा सहकारी दूध उत्पादक संघ मर्यादित, कोल्हापूर.

बी – १, एम. आय. डी. सी. गोकुळ शिरगाव, कोल्हापूर ४१६ २३४. फोन : ०२३१–२६७२३११ ते १५ फॅक्स : २६७२३७४
E-mail : mktg@gokulmilk.coop | sales@gokulmilk.coop | Website : www.gokulmilk.coop

Genesis Comm.

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 2 अंक : 2 मार्च–अप्रैल 2018

संपादन सलाहकार समिति

अध्यक्ष

डॉ. जी.एस. राजौरिया
अध्यक्ष
इंडियन डेरी एसोसिएशन

उपाध्यक्ष

डा. अनिल कु. श्रीवास्तव
अध्यक्ष
कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल

सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय

डॉ. इन्द्रजीत सिंह
निदेशक
केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान

डॉ. आर. आर. बी. सिंह
निदेशक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान

श्री रामचंद्र चौधरी
अध्यक्ष
अजमेर जिला दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड

श्री विश्वास चितले
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
चितले डेरी

डॉ. अनूप कालरा
कार्यकारी निदेशक
आयुर्वेट लिमिटेड

संपादक मंडल

प्रकाशक
श्री नरेश कुमार भनोट

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क

इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ 4

स्वागत

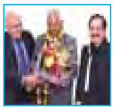

डॉ. राजौरिया आईडीए के नये अध्यक्ष चुने गये 8
संपादकीय डेस्क

रिपोर्ट

46वीं डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस: डेरी विकास और छोटे किसानों की समृद्धि का रास्ता 9
जगदीप सक्सेना

परंपरा

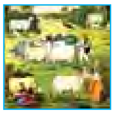

दूध ही अमृत है 14
ईश नारंग

देखभाल

गर्मी से दुधारू पशुओं का बचाव कैसे करें 24
डॉ. राजेन्द्र सिंह

सेहत

किसिम-किसिम के दूध 27
मनीष मोहन गोरे एवं राकेश कुमार

जानकारी

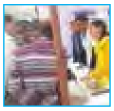

पशुपालकों की सेवा में आईवीआरआई 32
रूपसी तिवारी, त्रिवेणी दत्त एवं पुनीत कुमार

विधि

कृत्रिम गर्भाधान से नस्ल सुधार: कुछ सुझाव 36
संजय कुमार, रामेश्वर सिंह, हंसराज, रजनी कुमारी, संजीव कुमार

विचार–विमर्श

हिसार में नौवां एशियाई भैंस सम्मेलन-2018 39
इन्द्रजीत सिंह

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य
एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः डॉ. जी.एस. राजौरिया

उपाध्यक्षः डॉ. सतीश कुलकर्णी और श्री ए.के.खोसला

सदस्य

चयनितः श्री आर.एस. सोढ़ी, डॉ. जी.आर.पाटिल, डॉ. राजा रत्तिनम, डॉ. के.एस. रामचन्द्र, डॉ. जे.वी. पारिख, डॉ. एस.के. कनौजिया, श्री सुधीर कुमार सिंह, श्री किरीट के. मेहता, श्री राजेश सुब्रमनियन, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचन्द्र चौधरी और श्री टी.के. मुखोपाध्याय **नामित सदस्यः** श्री अरूण नरके, श्री एस.एस.मान, डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, श्री सी.पी. चार्ल्स, श्री अरूण पाटिल, श्री मिहिर कुमार सिंह, डॉ. आर.आर.वी. सिंह और श्री संग्राम आर. चौधरी

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्षः डॉ. जी.एस. राजौरिया, **उपाध्यक्षः** डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव; **सदस्यः** श्री ए.के. खोसला, डॉ. आर.एम. आचार्य, डॉ. किरण सिंह, डॉ. जी. आर. पाटिल, डॉ. शिव प्रसाद, डॉ. ए.के. सिंह, डॉ. ए.के. त्यागी, **कार्यकारी सम्पादक, आईजेडीएसः** डॉ. आर.के. मलिक **सम्पादक, दुग्ध सरिताः** डॉ. जगदीप सक्सेना

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, फैक्स – 91–11–26174719, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

क्षेत्रीय शाखाएं एवं चैप्टर्स

दक्षिणी क्षेत्रः श्री सी.पी. चार्ल्स, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** श्री अरूण पाटिल, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः arunpatilida@gmail.com **उत्तरी क्षेत्रः** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, अध्यक्ष, द्वारा एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, के सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता– 700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** डॉ. के. रत्तिनम, अध्यक्ष; द्वारा एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणद कृषि विश्वविद्यालय, आणद– 388110, गुजरात, ई–मेलः guptahk@rediffmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. पी. आई. गीवर्गीज़, अध्यक्ष, प्रोफेसर एवं प्रमुख तथा पूर्व डीन, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मन्नुथि, त्रिसूर–680651, फोन–0487–2372861, फैक्स–00487–2372855, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** श्री ललित कुमार कौशिक, अध्यक्ष, द्वारा जयपुर डेयरी, गांधीनगर रेलवे स्टेशन के पास, जयपुर– 302015, टेलीफोन नं. 9549653400, फैक्स 0141–2711075, ई–मेलः idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** श्री इन्द्रजीत सिंह, अध्यक्ष; द्वारा निदेशक, डेरी विकास विभाग, पंजब लाइवस्टॉक कॉम्पलैक्स, चौथी मंजिल, आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ के निकट, सेक्टर–68, मोहाली, फोन : 0172–5027285, ई–मेलः director_dairy@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री एस.के. सिंह, अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, पटना डेयरी कार्यक्रम, वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, फीडर बैलेन्सिंग डेयरी कॉम्प्लेक्स, फुलवारीशरीफ, पटना–01505. ई–मेलः sudhirpdp@yahoo.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** श्री ए.के. शर्मा, अध्यक्ष, (नामित); द्वारा निदेशक, एनडीआरआई, करनाल, 132001. टेलीफोनः 0184–2259002, 2252800. ई–मेलः dir@ndri.res.in **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** डॉ. सी. नरेश कुमार, अध्यक्ष, को/ओ. प्रोफेसर एवं प्रमुख (सेवानिवृत्त), डेयरी विज्ञान विभाग, मद्रास पशुचिकित्सा कॉलेज, चेन्नई–600 007. **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** श्री के. भास्कर रेड्डी, अध्यक्ष; प्रबंध निदेशक, क्रीमलाइन डेयरी प्रॉडक्ट्स लिमिटेड, 6–3–1238/बी/21, आसिफ एवेन्यू, राज भवन रोड, सोमाजीगुड़ा, हैदराबाद–500 082. फोनः 040–23412323, फैक्सः 040–23323353. **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष, प्रोफेसर, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221005, फोनः 0542–6701774/2368583, फैक्सः 0542–2368009, ई–मेलः dcrai.bhu@gmail.com

DeLaval

Capacity 500 Ltrs & 1000 Ltrs

Capacity 2000 Ltrs to 32000 Ltrs

DeLaval Milk Cooling Tanks

Unbeatable cooling
high quality milk
energy efficiency

We live milk

DeLaval Private Limited

A-3, Abhimanshree Society,
Pashan Road, Pune - 411008, India.
Tel. +91-20-6721 8200 | Fax +91-20-6721 8222
Email: marketing.india@delaval.com
Website: www.delaval.in

100 Years of Milking Excellence 1917 - 2017

Celebrating journey of 25 years in India

अध्यक्ष की बात,
आपके साथ

"किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए दूध उत्पादों और डेरी के विभिन्न आदानों को जीएसटी मुक्त करने की आवश्यकता है ताकि बाजार में इनकी बिक्री को बढ़ावा दिया जा सके।"

नयी सिफारिशें नयी राह

प्रिय पाठकों,

कोच्चि में 8 से 10 फरवरी, 2018 के दौरान आयोजित 46वीं डेरी इंडस्ट्री सम्मेलन के सफल और सराहनीय आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई। आईडीए–दक्षिण क्षेत्र और इसके केरल स्टेट चैप्टर के सदस्यों ने बहुत बारीकी के साथ योजना बनाकर हर छोटे–बड़े पहलू पर नजर रखी और इस तरह एक भव्य आयोजन को अंजाम दिया। कांफ्रेंस की हर गतिविधि को एक सफल परियोजना की तरह रूप–रेखा के अनुसार लागू किया गया, जिससे इसका स्वरूप निखरकर सामने आया। लगभग 2200 प्रतिभागियों ने कांफ्रेंस के तकनीकी व सांस्कृतिक आनंद के साथ लाजवाब मेजबानी की सराहना की।

तकनीकी प्रस्तुतियों और चर्चाओं के बाद बड़ी संख्या में लाभकारी सिफारिशें सामने आयी हैं, जिन्हें हमारी अंग्रेजी पत्रिका 'इंडियन डेरीमैन' के अंकों में प्रकाशित किया जा रहा है। एक बार फिर से यह स्पष्ट हुआ कि छोटे और सीमांत किसानों तथा भूमिहीन मजदूरों के लिए डेरी व्यवसाय आर्थिक और सामाजिक उद्धार का एक सशक्त माध्यम है और आगे भी बना रहेगा। भारत में विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में फैले लगभग 7.5 लाख गांवों में डेरी व्यवसाय इस सुधार में कारगर सिद्ध हो रहा है। विशेष रूप से जिन क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाओं का अभाव है और वर्षा भी कम होती है, वहां छोटे किसानों के लिए डेरी आमदनी का प्रमुख स्रोत है। निरंतर बढ़ती जनसंख्या के लिए पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना डेरी का एक मुख्य उद्देश्य रहा है और इसमें दूध उत्पादन, संग्रह, प्रसंस्करण तथा वितरण तक के सभी पहलू शामिल हैं। अधिक और अतिरिक्त उत्पादन के बेहतर प्रबंधन के लिए मूल्य वर्धन के पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करना है, ताकि दूध उत्पादकों के लिए अधिक आमदनी सुनिश्चित की जा सके।

डेरी में किसानों की दिलचस्पी को लगातार बनाये रखने के लिए जरूरी है कि दूध की आकर्षक कीमत दी जाए और बेहतर आमदनी देने वाले तथा अधिक दूध उत्पादक डेरी पशुओं की उचित देखभाल की जाए। प्राकृतिक संसाधनों के निरंतर कम होने के कारण यह आवश्यक हो गया है कि हम पशुओं पर आधारित डेरी व्यवस्था की बजाय प्रौद्योगिकी पर आधारित डेरी के व्यावहारिक विकल्प को अपनाएं। बेहतर जर्मप्लाज्म के तेज प्रसार के लिए आवश्यक है कि 'मल्टीपल ओव्युलेशन' और भ्रूण प्रतिरोपण या सभी मान्यता प्राप्त नस्लों से प्राप्त 'सेक्सकड सीमेन'

द्वारा प्रयोगशाला में भ्रूण उत्पादन जैसी नयी प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देकर लोकप्रिय बनाया जाए। इस दिशा में उन्नत जर्मप्लाज्म आपूर्ति केंद्रों की स्थापना करना उपयोगी सिद्ध होगा। अधिक दूध उत्पादन का लक्ष्य प्रति पशु अधिक उत्पादन या समूह में पशुओं की संख्या को बढ़ाकर हासिल करना होगा, तभी हम दूध की बढ़ती मांग को पूरा कर सकेंगे।

अब समय आ गया है कि डेरी पशुओं के आहार के लिए हम केवल फसल अवशेषों पर निर्भर ना रहें, बल्कि अधिक उपज देने वाली चारा फसलों के उत्पादन पर जोर दें, जिन्हें आसानी से काटकर तबेलों तक पहुंचाया जा सके। दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए पशु आहार व्यवस्था में सुरक्षित एवं पोषक कृषि–औद्योगिक उप–उत्पादों, बागानी फसलों और वन–वृक्षों की पत्तियों को भी शामिल करना होगा।

डीआईसी - 2018 के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा विशेष डाक टिकट का विमोचन

दूध और दूध उत्पादों को पर्याप्त मात्रा में आम जनता को उपलब्ध कराने के लिए डेरी व्यवसाय में प्रसंस्करण, पैकेजिंग और मार्केटिंग के लिए ऐसी विधियों को अपनाना होगा कि इनकी लागत कम हो, ताकि दूध और दूध उत्पादों की लागत भी कम हो सके। इसलिए सिफारिश की जाती है कि दूध संग्रह और शीतलन केंद्रों पर ऊर्जा के गैर–परंपरागत स्रोतों का इस्तेमाल किया जाए, प्रसंस्करण सुविधाओं पर कम लागत वाली प्रौद्योगिकियों को अपनाया जाए और कम से कम लागत वाली पैकेजिंग के साथ मार्केटिंग की सर्वथा नवीन रणनीतियां अपनायी जाएं। इलेक्ट्रॉनिक मिल्क टेस्टर्स और ऑटोमेटेड दूध संग्रह इकाइयों में सौर ऊर्जा का अनिवार्य रूप से उपयोग करके ऑटोमेटिक दूध संचालन प्रणालियों में अधिक प्रभावशीलता, कुशलता और पारदर्शिता को सुनिश्चित किया जा सकता है, जिससे ग्रामीण दूध उत्पादक अधिक खुशहाल जीवन की ओर अग्रसर हो सकेंगे। किसानों को व्यापक प्रशिक्षण और बढ़ावा देकर सुरक्षित दूध उत्पादन के सिद्धांतों और पद्धतियों को लागू किया जा सकता है।

हमारे देश में दूध का बहुत बड़ा भाग छोटे पशुपालकों द्वारा प्रदान किया जाता है, इसलिए आकर्षक कीमतें और तुरंत भुगतान की व्यवस्था करके एक सुदृढ़ दूध आपूर्ति व्यवस्था को जारी रखा जा सकता है।

दूध और दूध उत्पादों में एंटीबायोटिक्स अवशेष मौजूद रहने की समस्या को हल करने के लिए देशी औषधियों का उपयोग करते हुए रोकथाम और उपचार के उपायों को विस्तृत बनाकर पशु स्वास्थ्य कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।

फील्ड स्तर पर दूध में मिलावट की जांच के लिए आजकल कई प्रामाणिक और तेज परीक्षण विधियां उपलब्ध हैं, जिन्हें अपनाना चाहिए। डेरी संचालकों को प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षित करके इस तरह सक्षम बनाना चाहिए कि डेरी वैल्यू चेन में दूषित दूध किसी भी तरह शामिल ना हो सके।

मुझे आशा है कि हमारे पाठक इस अंक में प्रस्तुत किये जा रहे डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेस के विवरण का लाभ उठाएंगे और देश में डेरी व्यवसाय तथा डेरी पशुपालकों की उन्नति व समृद्धि में अपना योगदान देंगे ।

आपका

घनश्यामसिंह राजौरिया

(घनश्याम सिंह राजौरिया)

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

अहमदाबाद जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)
अमृत फ्रेश प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
आयुर्वेट लिमिटेड (दिल्ली)
आरोहण डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, तंजावुर (तमिलनाडु)
बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)
बनासकांठा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)
बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)
बेलगांव जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसायटी संघ लिमिटेड, बेलगांव (कर्नाटक)
बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)
बिहार राज्य दुग्ध सहकारिता संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
बिमल इंडस्ट्रीज, यमुना नगर (हरियाणा)
बोवियन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)
ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
चंबल डेयरी उत्पाद, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
सीपी दुग्ध और खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
क्रीमी फूड्स लिमिटेड (दिल्ली)
डेयरी क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
डीएसएम न्यूट्रिशनल प्रोडक्ट्स, मुंबई (महाराष्ट्र)
डेनफोस इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)
देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद डीयूएसएस लिमिटेड, बेगूसराय (बिहार)
डोडला डेयरी लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
द्वारका मिल्क एंड मिल्क प्रोडक्ट्स लिमिटेड, नवी मुंबई (महाराष्ट्र)
इली लिली एशिया इंक, बेंगलुरु (कर्नाटक)
एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
फार्मगेट एग्रो मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
किसान प्रशिक्षण केन्द्र, डेयरी विकास, रांची (झारखंड)
खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)
फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)
फोंटेरा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
गरिमा मिल्क एंड फूड्स प्रोडक्ट्स लिमिटेड (दिल्ली)
गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)
जीईए वेस्टफालिया सेपरेटर (ई) प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
गांधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गांधीनगर (गुजरात)
गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)
गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आंणद (गुजरात)
जीआरबी डेयरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)
एचसीएल इन्फोसिस्टम्स लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)
हेटसन कृषि उत्पाद लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)
हिंदुस्तान इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)
आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)
इग्लू डेयरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
आईटीसी फूड्स, बेंगलुरू, (कर्नाटक)
भारतीय संभार एवं सामग्री प्रबंधन रेल संस्थान (दिल्ली)
जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)
कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
कस्तूरबा जैव–उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
करनाल दुग्ध उत्पाद लिमिटेड (दिल्ली)
करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)
ख़ैबर एग्रो फार्म्स प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)
खम्बेत कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)
क्वालिटी डेयरी इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली (दिल्ली)
कोलेनमेसे या ट्रेडफेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)
कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)
लार्सन एंड टूब्रो इन्फोटेक लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
मध्य प्रदेश राज्य सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, भोपाल (मध्य प्रदेश)
मालाबार क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कोझीकोड (केरल)
मालगंगा डेयरी फार्म, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)
एनसीडीएफआई, आंणद (गुजरात)
राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, आणंद (गुजरात)
भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, सोनीपत (हरियाणा)
नोवोजाइम्स दक्षिण एशिया प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)
नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ओराना इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)
पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)
पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)
पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)
परम डेयरी लिमिटेड (दिल्ली)
पराग दुग्ध खाद्य प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रादेशिक सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
प्रिया दुग्ध और दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
पब्लिक प्रोक्योरमेंट ग्रुप (दिल्ली)

संस्थागत सदस्य

प्रभात डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)

राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, सांगली (महाराष्ट्र)

राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

एसआर थोराट दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

स्टर्लिंग एग्रो इंडस्ट्रीज लिमिटेड (दिल्ली)

सिनर्जी एग्रो–टेक प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)

सील्ड एयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

श्राइबर डायनामिक्स डेयरीज लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

सीरप (एसईआरएपी) इंडस्ट्रीज (दिल्ली)

श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)

श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

श्री राजेश्वरी डेयरी उत्पाद उद्योग प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

स्टर्न इन्ग्रेडिएन्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)

शिमोगा सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसाइटीज़ संघ लिमिटेड, शिमोगा (कर्नाटक)

टेट्रा पैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

द कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारी संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)

द पटियाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पटियाला (पंजाब)

द पंजाब राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, चंडीगढ़ (पंजाब)

द रोहतक सहकारी दुग्ध उत्पादक लिमिटेड, रोहतक (हरियाणा)

द रोपड़ जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, मोहाली (पंजाब)

द संगरूर जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (पंजाब)

उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)

उत्तर प्रदेश दीन दयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)

वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)

वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

विद्या डेयरी, आणंद (गुजरात)

विर्बक पशु स्वास्थ्य इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

ज्यूजर इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

वार्षिक सदस्य

एबीटी उद्योग, कोयंबटूर (तमिलनाडु)

एबॉट हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

अमृत खाद्य, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

भोपाल सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (माध्य प्रदेश)

बी.जी. चितले डेयरी, सांगली (महाराष्ट्र)

क्लोरोफिल टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बंगलौर

कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

क्रीमलाइन डेयरी उत्पाद लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

डीलावेल प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला

आईसीएल प्रबंधन एवं व्यापार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)

भारतीय इम्युनोलॉजिकल्स लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

इन्फीकोल्ड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आणंद (गुजरात)

जिंदल स्टेनलेस कॉर्पोरेट प्रबंधन सेवा प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

जम्मू व कश्मीर दुग्ध उत्पादक सहकारिता लिमिटेड

जेएमडी सोनिक इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

ख़ैबर एग्रो फार्म प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)

माही दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)

मैगनाम नेटलिंक प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

मेसे म्यूनशेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)

मॉडर्न डेयरीज लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)

ऑटोकम्पू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (नई दिल्ली)

पीएमएस इंजीनियर्स (इंटरनेशनल) सेवा (दिल्ली)

राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)

रिनैक इंडिया लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

सह्याद्रि कृषि उत्पाद और डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)

शारदा डेयरी एवं खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर (छत्तीसगढ़)

साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (दिल्ली)

सीता राम गोकुल मिल्क्स केटीएम लिमिटेड, काठमांडू (नेपाल)

शेंदोंग बिहाई मशीनरी कंपनी लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

एसपी मणि एंड मोहन डेयरी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (तमिलनाडु)

शिरीष पॉलीकेम प्राइवेट लिमिटेड, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

श्री एडीटिव्स (पी एंड एफ) लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

श्री ममता दुग्ध डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, जालोर (राजस्थान)

श्रीकृष्णा दुग्ध प्राइवेट लिमिटेड, हुबली (कर्नाटक)

श्रीचक्र दुग्ध उत्पाद एलएलपी (आंध्र प्रदेश)

सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

अंबाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (हरियाणा)

तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (केरल)

वर्ल्ड ऐनीमल प्रोटेक्शन, नई दिल्ली

स्वागत

डॉ. राजौरिया आईडीए के नये अध्यक्ष चुने गये

देश के सुपरिचित डेरी वैज्ञानिक, नीतिकार और डेरी विशेषज्ञ डॉ. जी.एस. राजौरिया ने गत 20 जनवरी 2018 को इंडियन डेरी एसोसिएशन के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाल ली है। राष्ट्रीय स्तर पर हुए चुनावों के उपरांत परिणामों की घोषणा 10 जनवरी को हुई थी। डॉ. राजौरिया वर्ष 2014 से आईडीए के उपाध्यक्ष थे और एक टर्म के लिए आईडीए–उत्तरी क्षेत्र के अध्यक्ष भी थे। वह आईडीए की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति (सीईसी) के सात टर्म तक सदस्य रहे। विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने आईडीए के विकास और प्रसार में अहम् योगदान दिया। वह 'इंडियन डेरीमैन' के संपादक और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' के प्रधान संपादक भी रहे। 'दुग्ध सरिता' के शुभारंभ और प्रकाशन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। डॉ. राजौरिया ने इन सभी पत्रिकाओं के स्तर को सुधारने और अधिक उपयोगी बनाने में अपना विशेष योगदान दिया। डॉ. राजौरिया 'एडवाइज़री कमीशन ऑन क्वालिटी सिस्टम्स' के अध्यक्ष भी थे। आईडीए परिवार उन्हें इस नयी जिम्मेदारी के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता है। हम आशा करते हैं कि डॉ. राजौरिया के असाधारण नेतृत्व में आईडीए सफलता के नये शिखर तक पहुंचेगा, जिससे देश में डेरी विकास को नया बल मिलेगा।

आईडीए हाउस में 20 जनवरी, 2018 को नयी गठित सीईसी की पहली बैठक

डेरी क्षेत्र के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ डॉ. सतीश कुलकर्णी और श्री ए.के. खोसला आईडीए के उपाध्यक्ष पद पर चुने गये हैं। इन्हें भी बधाई।

नयी सीईसी के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों को आईडीए की ओर से बधाई और शुभकामनाएं।

रिपोर्ट

46वीं
डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस
डेरी विकास और छोटे किसानों की समृद्धि का रास्ता

प्रस्तुतिः जगदीप सक्सेना

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रति वर्ष आयोजित की जाने वाली प्रतिष्ठित डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस के 46वें संस्करण का आयोजन 8 से 10 फरवरी, 2018 को केरल के मनोरम नगर कोच्चि में किया गया। आईडीए–दक्षिण क्षेत्र के कुशल प्रबंधन और आईडीए–केरल चैप्टर के प्रभावी संचालन में यह कांफ्रेस सफलता के एक नए आयाम तक पहुंची। देश के अलग–अलग भागों से आये लगभग 2200 प्रतिनिधियों ने इसमें भागीदारी की तथा 17 तकनीकी सत्रों में 54 विद्वान वक्ताओं ने डेरी से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर अपनी प्रस्तुतियां पेश कीं। आज के डेरी विकास की आवश्यकताओं को देखते हुए इस वर्ष सम्मेलन की थीम 'डेरी : सफिशिएंसी टु एफिशिएंसी' रखी गयी और समस्त चर्चाएं तथा विचार–विमर्श इसी सोच के दायरे में संपन्न हुए। डेरी किसानों, पशुपालकों, डेरी व्यवसायियों, डेरी सहकारी समितियों, दुग्ध उत्पादक संघों, बड़े डेरी उद्योगों, डेरी संबंधित संस्थानों के वैज्ञानिकों तथा डेरी उद्योग से जुड़े उत्पादों के निर्माताओं आदि ने इस कांफ्रेंस में भागीदारी करके इसे जीवंत बना दिया।

मुख्य अतिथि के रूप में कांफ्रेंस का उद्घाटन करते हुए केरल सरकार के वन, पशुपालन, डेरी एवं प्राणि उद्यान मंत्री श्री के. राजू ने केरल में इस महत्वपूर्ण आयोजन के लिए बधाई और धन्यवाद दिया और बताया कि इस सम्मेलन की थीम देश के डेरी विकास के लिए प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है। उन्होंने केरल में डेरी सेक्टर की दशा पर

मुख्य अतिथि द्वारा उद्घाटन भाषण

प्रकाश डालते हुए कहा कि यहां लगभग दो लाख छोटे और सीमांत किसान केवल एक या दो दुधारू पशुओं के साथ दूध उत्पादन में अहम् योगदान कर रहे हैं। परंतु यहां दूध उत्पादन की लागत अन्य राज्यों की तुलना में अधिक है, जो एक चुनौती है। लेकिन इसका सामना करने और छोटे पशुपालकों की मदद के लिए केरल सरकार ने प्रभावी रास्ता खोज लिया है, जिस पर अमल किया जा रहा है। मंत्री महोदय ने केरल में डेरी सहकारिता की सफलता और नॉर्थ केरल डेरी प्रोजेक्ट की कामयाबी का भी उल्लेख किया। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य की संबंधित संस्थाओं द्वारा केरल में दूध की गुणवत्ता और सुरक्षा पर पूरा ध्यान

अध्यक्ष – आईडीए द्वारा अध्यक्षीय भाषण

दिया जा रहा है। मुख्य अतिथि ने प्रतिष्ठित डॉ. कुरियन पुरस्कार प्रदान किया और डेरी विशेषज्ञों को पैट्रनशिप तथा फैलोशिप से सम्मानित किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में आईडीए के अध्यक्ष डॉ. जी.एस. राजौरिया ने दूध की घटती कीमतों पर चिंता जतायी और कहा कि इससे छोटे पशुपालक और सीमांत किसान सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। उन्होंने इसके लिए एक समग्र कार्य योजना बनाने की जरूरत पर बल दिया। डॉ. राजौरिया ने जोर देकर कहा कि भारत सरकार द्वारा डेरी किसानों को दिये जा रहे लाभों में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए, यानी जो फायदे सहकारी दूध उत्पादक संघों को मिलें, वही फायदे निजी क्षेत्र की डेरियों को भी मिलने चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि घी और मक्खन में मौजूद कोलेस्ट्रॉल मानव स्वास्थ्य को नुकसान नहीं पहुंचाता, इसलिए डेरी उद्योग को इसके उपयोग को बढ़ावा देने के प्रयास करने चाहिए।

अपने मुख्य भाषण (कीनोट ऐड्रेस) में नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) के अध्यक्ष श्री दिलीप रथ ने भारत में डेरी उद्योग और डेरी व्यवसाय का एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि डेरी विकास के लिए भारत सरकार की नई योजनाएं एनडीडीबी के सहयोग से लागू की जा रहीं हैं और इनमें डेरी व्यवसाय से जुड़े अनेक अहम् मामलों पर ध्यान दिया गया है। श्री रथ ने कहा कि प्रति पशु दूध उत्पादकता बढ़ाने के लिए पशु प्रजनन, पशु पोषण और पशु स्वास्थ्य पर पर्याप्त ध्यान देने की भी जरूरत है। दूध की गुणवत्ता और सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, जिसे प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल और जागरूकता से सुधारा जा सकता है। गांवों के लाखों दूध उत्पादकों के लिए बाजार सुविधा मुहैया कराने की जरूरत पर भी उन्होंने बल दिया।

श्री अनिल एक्स., आईएएस, सचिव, पशुपालन एवं डेरी विकास विभाग, केरल सरकार ने डीआईसी–2018

देश के विभिन्न भागों से पधारे प्रतिनिधि

महिला डेरी किसानों को सम्मान

देश के डेरी विकास में महिलाएं बढ़–चढ़ कर भागीदारी कर रहीं हैं और उनका विशेष योगदान है। इसकी सराहना और मान्यता के लिए आईडीए द्वारा देश के चारों क्षेत्रों से चुनी गयी डेरी महिला किसानों को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ डेरी महिला पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष मुख्य अतिथि ने पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित किया। सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई।

सुश्री जिनी पी.बी., आईडीए–दक्षिण क्षेत्र

श्रीमती नीतू यादव, आईडीए–उत्तर क्षेत्र

श्रीमती प्राची अभय पाटिल, आईडीए–पश्चिम क्षेत्र

श्रीमती रूबी ठाकुर, आईडीए–पूर्वी क्षेत्र की प्रतिनिधि

आईडीए परिवार की ओर से विश्व महिला दिवस (8 मार्च) के अवसर पर देश की लाखों डेरी महिला किसानों को उनके अथक परिश्रम, लगन और बहुमूल्य योगदान के लिये सादर अभिवादन व नमन।

अध्यक्ष, आईडीए ने डेरी किसानों से संवाद किया

डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस में प्रत्येक वर्ष की तरह इस बार भी दो विशेष किसान सत्र आयोजित किये गये जिनकी अध्यक्षता आईडीए के अध्यक्ष डॉ. जी.एस. राजौरिया ने की। गुजरात, राजस्थान, केरल, कर्नाटक और हरियाणा से आये डेरी विशेषज्ञों ने डेरी किसानों की समस्याओं को सामने रखा, जिसपर पैनल द्वारा चर्चा हुई और समाधान के रास्ते सुझाये गये। आमतौर पर देखा गया कि डेरी किसान चारे की समस्या और दूध की कम कीमतों से परेशान रहते हैं। डेरी किसानों को डेरी के लिए वित्तीय साधन जुटाने में भी समस्या आती है। देश के विभिन्न भागों से आये डेरी किसानों ने भी अपने अनुभव साझा किये, जिसका लाभ चर्चा में भाग ले रहे अन्य किसानों को भी मिला। सत्र में अध्यक्ष ने अपने संबोधन में सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद दिया और आश्वासन दिया कि किसानों की समस्याओं को आईडीए द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा के लिए प्रस्तुत किया जाएगा और उचित मंचों तक समाधान के लिए पहुंचाया जाएगा।

के लिए चुनी गयी थीम की सराहना करते हुए कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए हमें नये विचारों और नयी नीतियों को लागू करना होगा ।

डॉ. बांदला श्रीनिवास, सचिव, आईडीए (दक्षिण क्षेत्र) ने अपने संक्षिप्त संबोधन में किसानों को हमारे समाज का केंद्र माना और कहा कि इसलिए हम किसानों की आजीविका के साथ समझौता नहीं कर सकते।

उद्घाटन सत्र का शुभारंभ करते हुए आईडीए (दक्षिण क्षेत्र) के अध्यक्ष श्री सी.पी. चार्ल्स ने सभी गणमान्य अतिथियों, प्रतिभागियों, वक्ताओं और सभी संबंधितों का हृदय से स्वागत और अभिनंदन किया, जबकि 46वीं डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस के महासचिव डॉ. पी.आई. गीवर्गीस ने आईडीए और सभी आयोजकों की ओर से धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। ■

गणमान्य अतिथियों द्वारा स्मारिका का विमोचन

लोकप्रिय रही अंतरराष्ट्रीय डेरी प्रदर्शनी

डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस के साथ एक विशाल डेरी अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इसमें लगभग 125 स्टॉलों के माध्यम से डेरी फार्मिंग, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और डेरी उत्पादों से जुड़ी नयी प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया। मुख्य अतिथि ने इसका उद्घाटन किया और प्रशंसा की। लगभग 15,000 आगंतुकों ने इसे देखा, सराहा और जानकारी प्राप्त की।

परंपरा

दूध ही अमृत है

ईश नारंग
पूर्व सहायक आयुक्त (डेरी)
पशुपालन विभाग, भारत सरकार

प्राचीन भारतीय चिकित्सीय व शास्त्रीय साहित्य में दूध को अमृत कहा गया है। यह उपमा इसके गुणों के आधार पर दी गई है। इस लेख में पढ़िए दूध के बारे में प्राचीन भारतीय ग्रंथों में दिये गए इसके गुण आधुनिक विज्ञान की मान्यताओं पर कैसे खरे उतरते हैं। इसके लेखक श्री ईश नारंग एक डेरी टेक्नोलॉजिस्ट होने के अतिरिक्त वैदिक साहित्य में भी स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त हैं। आपने गुरुकुल कांगड़ी युनिवर्सिटी से वैदिक साहित्य में मास्टर की उपाधि प्राप्त की है। आप एक प्रशिक्षित एवं कुशल प्राकृतिक चिकित्सक तथा यज्ञ चिकित्सक भी हैं।

सृष्टि के आरम्भ से ही मनुष्य एक अमृत नाम की वस्तु की खोज करता रहा है जिसे लेकर वह सभी रोगों व दुखों से छुटकारा पा ले और अमर हो जाये। उस अलौकिक एवं कल्पित अमृत को तो मनुष्य पा सके या नहीं, किन्तु इस संसार में एक ऐसी अद्भुत वस्तु प्रकृति ने दी है जिसे अमृत की संज्ञा दी जा सकती है और वह वस्तु है दुग्ध या दूध। इस लौकिक अमृत को मनुष्य सुगमता से प्राप्त कर सकता है।

महाभारत में एक श्लोक है :

अमृतं वै गवां क्षीरमित्याह त्रिदशाधिपः ।
तस्माद् ददाति यो धेनुममृतं स प्रयच्छति।

महा० अनु० ६७/४६

इसका साधारण अर्थ है : गाय का दूध ही

वास्तव में अमृत है। इसलिए जो गाय या धेनु दान देता है वह अमृत दान देता है, ऐसा देवराज इन्द्र ने कहा है। इसी प्रकार ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 71 वें सूक्त के छठे मन्त्र में कहा गया है :

गोषु प्रियम् अमृतं रक्षमाणा (ऋग 1/71/6)

इसका अर्थ है गोदुग्ध अमृत है। यह हमारी (रोग से) रक्षा करता है। इसी प्रकार ऋग्वेद के मन्त्र 5/19/14 में भी कहा गया है कि गोदूध सर्वाधिक प्रिय एवं वांछनीय पेय पदार्थ है। अन्य अनेक स्थानों पर दूध को एक स्वास्थ्यवर्धक, रोगनाशक, रोगों से बचाव करने वाला, ओज व शक्ति देने वाला पेय कहा गया है। केवल शारीरिक शक्ति नहीं अपितु इसे बुद्धिवर्धक व सद्बुद्धि देने वाला भी कहा गया है।

आयुर्वेद के ग्रन्थ "निघंटु" में भी दूध के अमृत एवं पीयूष नाम दिए दिये गये हैं। इस प्रकार इन सभी शास्त्रीय प्रमाणों से ज्ञात होता है कि संसार में यदि कोई अमृत है तो वह दूध ही है। अमृत नाम की कोई काल्पनिक वस्तु नहीं है।

ऐसा नहीं है कि दूध को अमृत की उपमा केवल भावनावश अथवा किसी धार्मिक विचार से दी गई है। बिना गुणों के किसी वस्तु की प्रशंसा करना भारतीय परम्परा नहीं है। दूध को यह उपमा इसके गुणों के आधार पर ही दी गई है। आइये देखते हैं विभिन्न ग्रंथों में दूध के गुणों का किस प्रकार वर्णन किया गया है व आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर वह कैसे खरा उतरता है।

चिकित्सीय ग्रंथों में दूध के गुणों का वर्णन

चरक शास्त्र संसार के प्राचीनतम चिकित्सा शास्त्रों में गिना जाता है। चरक सूत्र स्थान 27/214 में दूध के गुणों का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्ष्णपिच्छिलम्।
गुरु मन्दं प्रसन्नं च गव्यं दशगुणं पयः।

चरक 27/217

अर्थात गाय का दूध सुस्वादु, मीठा, शीत, कोमल, घना, चिकना, कुछ भारी, देर से खराब होने वाला और निर्मल – इन दस गुणों से युक्त है। अगले श्लोक में ही फिर लिखा है:

दूध पुरुषों में ओज की वृद्धि करता है।

इसी प्रकार ऋषि धन्वन्तरी, जो भारतीय प्राचीन चिकित्सा पद्धति के एक अन्य विद्वान रहे हैं, कहते हैं कि गाय का दूध सभी अवस्थाओं एवं रोगों में प्रयोग करने योग्य भोजन पदार्थ है। इससे वात, पित्त व हृदय रोग नहीं होते।

अथर्ववेद में लिखा है कि दूध एक सम्पूर्ण भोज्य पदार्थ है। इसमें मनुष्य शरीर के लिए आवश्यक वे सभी तत्व हैं, जिनकी हमारे शरीर को आवश्यकता होती है।

"यूयं गावो मेदयथाम कृशं चिद्श्रीरं चित कृणुथाम सुप्रतीकम भद्र गृहम कृणुथ भद्रवाचो बृहद वो उच्यते सुभासु"

अथर्व 4/21/6

इसका अर्थ है गाय अपने दूध से कृशकाय मनुष्य को पुष्ट करती है, निस्तेज को तेजवान बनाती है और घर को कल्याणमय बनाती है। इस प्रकार उस व्यक्ति की सभ्य लोगों में प्रशंसा होती है। इस मन्त्र में दूध के पौष्टिक गुणों के अतिरिक्त एक अन्य बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि शारीरिक दृष्टि से पुष्ट व्यक्ति ही समाज में सभ्य व्यक्ति माना जाता है। इस प्रकार गाय व्यक्ति को सभ्य समाज का अंग बनाती है। दूध के इन सभी पौष्टिक गुणों के कारण ही वेदों में विद्वानों व अतिथियों का सम्मान भी दूध व घी से बनाई हुए भात से करने की बात कही गई है। यह खाद्य पदार्थ संभवतः आजकल की दूध और चावल की खीर जैसा है (अथर्ववेद 18/4/16 तथा 18/4/19)।

दूध के बल देने वाले गुणों के कारण ही अथर्ववेद 18/4/34 में कहा गया हैः

"धेनवः धानाः ऊर्णम अस्मे विश्वाहा दुहाना तन्तु"

अथर्व 18/4/34

अर्थात दुधारू गाय पुष्टिकारक व बलदायक रस (दूध व घी आदि) तेरे लिए देती रहे।

गाय के दूध का रोगनाशक गुण

अथर्ववेद के मन्त्र 1/21/1 में बड़े स्पष्ट शब्दों में बताया गया है।

अनु सूर्यमुदयतां हृदयोतो हरिमा च ते
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परिदध्मसि।
(अथर्व १/२२/१)

यह मन्त्र इंगित करता है कि लाल रंग की गाय के दूध से हृदय रोग व पांडु रोग दूर होते हैं। लेकिन कैसे?

आज के विज्ञान की अनेक शोध कृतियां हमें बताती हैं कि गाय के दूध के सेवन से कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम होती है। लगभग दो लिटर प्रतिदिन दूध पीने से भी रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ती नहीं है, अपितु कम होती है। अब यदि हृदय रोग कोलेस्ट्रोल की मात्रा से सम्बंधित बताये जाते हैं तो, निश्चय ही गाय के दूध का सेवन हृदय रोग से हमें बचाने में सहायक होगा।

इसी प्रकार पीलिया (पांडु रोग) के उपचार में भी दूध सहायक होता है। दूध की प्रोटीन का पाचन लगभग 96% होता है। इस प्रकार पीलिया में जिसमें लिवर की काम करने की क्षमता कम हो जाती है, यदि हम सुपाच्य प्रोटीन लेंगे तो हमारे शरीर की शक्ति बनी रहेगी और हम जल्दी स्वस्थ हो जायेंगे, किन्तु हाँ! यह विषय और अधिक वैज्ञानिक खोज भी मांगता है।

ऋग्वेद व अथर्ववेद के निम्न दो मन्त्र एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण दिशा की ओर संकेत करते है।

चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चछद्यात।
पर्थिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु।।

ऋग्वेद 10/73/9

यावतीनामोषधीनां गावःप्राश्नन्त्यघ्न्या यावतीनामजावयः।
तावतीस्तुभ्योषधीः शर्म यच्छन्त्वा शर्म यच्छन्त्वाभृता।।

अथर्ववेद 8/7/25

इनमें कहा गया है कि जो गाय औषधियां खाती हैं, उनके गुणों को वह अपने दूध में दे देती हैं और इस प्रकार हमें रोगों से मुक्त करती हैं। ये मन्त्र औषधि युक्त दूध के उत्पादन की संभावनाओं की ओर इशारा कर रहे हैं।

आज भी पशु विज्ञान के कुछ वैज्ञानिकों ने गाय को ऐसी औषधियां खिला कर उनके दूध से मधुमेह आदि रोग के उपचार करने के कई सफल परीक्षण किये हैं। यह विषय भी और अधिक वैज्ञानिक खोज मांगता है।

इसी प्रकार दूध के साथ दूध से बने अन्य पदार्थों की भी महत्ता वेद आदि शास्त्रों में की गई है। ऋग्वेद के मन्त्र 10/179/3 में दही को देवों का भोजन कहा गया हैः

श्रातं मन्य ऊध निश्रातमग्नौ सुश्रातं मन्ये तदयतं नवीयः।
माध्यंन्दिनस्य सवनस्य दध्न पिबेन्द्र वज्रिन्पुरुकृज्जुषाणः।।
(ऋग्वेद १०/१७९/३)

इस मन्त्र का अर्थ है कि यह दही रोगरहित दूध से बनी है। पहले गाय के स्तन में पकी है, फिर इसे अग्नि पर पकाया गया है, अतः यह बड़ा लाभकारी पदार्थ है। विविध कार्य करता हुआ मेहनत करने वाला व्यक्ति यदि इसे दोपहर के समय सेवन करता है तो यह बहुत लाभकारी है।

इसी प्रकार ऋग्वेद के मन्त्र 1/187/10 में दही, सत्तू व घी से बने एक पौष्टिक पदार्थ 'करम्भ' का वर्णन है। यह भी रोगनाशक व शक्तिदायक कहा गया है।

गोदुग्ध से प्राप्त घी का महत्त्व

घी को जीवन के लिए सभी खाद्य पदार्थों में उत्तम व आवश्यक पदार्थ माना गया है। इसी लिए ऋग्वेद 10/18/2 तथा अथर्व वेद 3/12/1 तथा 3/12/4 में घी से भरे घरों के लिए प्रार्थना की गई है। अथर्ववेद के मन्त्र 3/12/8 में कहा है:

घृतस्य धाराममृतेन संभृताम
(अथर्ववेद ३/१२/८)

इसमें घी की धारा को अमृत से भरी हुई धारा कहा गया है। अन्य अनेक स्थानों पर घी को "निर्दोष" भोजन पदार्थ कहा गया है। उसके सेवन से बल की वृद्धि होती है (ऋग्वेद 10/19/7), शरीर पुष्ट होता है तथा आयु में वृद्धि होती है (अथर्ववेद 2/31/9)।

ऋग्वेद 1/20/3। तथा 3/55/16 आदि स्थानों में गाय को **'सर्बदुधा'** कहा गया है:

सर्बदुधा
ऋग्वेद- १/२०/३ तथा ३/५५/१६

ग्रिफिथ, स्कंद्स्वामी व वेंकत्मधाव ने सर्बदुधा का अर्थ अमृत की वर्षा करने वाली क्रिया बताया है। ऋग्वेद के ही एक अन्य स्थल पर सर्बदुधा का अर्थ धन को प्राप्त कराने वाली शक्ति कहा गया है। आज के सन्दर्भ में पुष्टिकारक दूध देने वाली गाय को अमृत देने वाली और दूध को बेच कर धन कमाने वाली शक्ति कहना सार्थक है।

सामवेद का यह निम्न मन्त्र गाय के दूध को मन को शांत करने वाले गुणों की ओर इशारा करता है:

स नः पवस्व शङ्गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥
साम पूर्व० १,२

शायद मानसिक रोगों में दूध द्वारा उपचार की संभावनाओं को खोजा जा सकता है।

दूध के इन्हीं गुणों के कारण गाय को अनेक ग्रंथों में कहीं माता, कहीं अघन्या (जिसका वध नहीं करना चाहिये), कहीं अन्न स्वरूपा, तो कहीं अमृत रस बरसाने वाली कहा गया है। इसी कारण, संभवतः भारतीय जनमानस के लिए गाय पूज्य व वन्दनीय बन गई। यजुर्वेद के मन्त्र 22/22 में राष्ट्र की वृद्धि व स्वतंत्रता की कामना करते हुए दुधारू गायों की भी प्रार्थना की गई है, "दोग्धिर्धेनु' – हे प्रभु मेरे स्वतंत्र देश में अधिक दूध देने वाली गाय हों ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऋग्वेद से लेकर महाभारत और चरक, सुश्रुत और धन्वन्तरी आदि वैद्यों ने भी अपने–अपने तरीके से गाय के दूध के गुणों को दर्शाते हुए उसके महत्त्व का वर्णन किया है।

मोहनजोदड़ो की खुदाई में भी एक मुद्रा मिली थी जिसमें 'कुकुदमान' सांड की छाप है। यह सांड अथवा बैल गोवंश का ही द्योतक है। यही मुद्रा आजकल हमारे राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड के प्रतीक चिन्ह के रूप में प्रयोग की जाती है। यह सभी उदाहरण भारत में गौ, गोदुग्ध व दूध से प्राप्त पदार्थों के मनुष्य जीवन के लिए महत्त्व को दर्शाते हैं।

मध्यकाल में दुग्ध उत्पादन व् गोपालन उद्योग की उपेक्षा

आजकल हम देखते हैं कि भारत में प्रति गाय दूध का उत्पादन अन्य देशों की की तुलना में काफी कम है। इससे लगता है कि हमारे यहाँ गोपालन की परम्परा शायद कम विकसित रही होगी। किन्तु ऐसा मध्य काल में किसानों की शिक्षा आदि की ओर ध्यान न देने के कारण हुआ लगता है। अधिक दूध उत्पादन के उपायों का भी हमारे प्राचीन शास्त्रों में पर्याप्त वर्णन है। जो समाज दूध के गुणों के महत्त्व को जानता हो, समझता हो,

गाय को पूज्य मानता हो, वहां की गाय कम दूध देने वाली हो, ऐसा संभव नहीं हो सकता। लगता है विदेशी शासन के दौरान जानबूझ कर हमारे किसानों को इस शिक्षा से वंचित कर दिया गया और हमें यह आभास कराया गया कि हम अन्य पश्चिमी देशों की तुलना में इस विषय में पिछड़े हुए हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि भारतीय समाज इस विषय में बहुत अधिक विकसित था एवं दूध व दूध के महत्त्व को जानता, समझता और उस ज्ञान का भरपूर उपयोग भी करता था।

निष्कर्ष

- हमारे ऋषि अपने समय के वैज्ञानिक थे और वे दूध व दूध से बने पदार्थों के गुण व उनके पौष्टिक पदार्थों के बारे में पूरी तरह जानते थे।
- विभिन्न रोगों का दूध व् दूध के पदार्थों द्वारा उपचार करना भी जानते थे।
- गायों को चारे में औषधियुक्त पदार्थ खिला कर उस दूध से मनुष्य के रोगों का उपचार करना भी जानते थे।
- दूध को गर्म करके उसे पीने के लिए व दही आदि बनाने के लिए सुरक्षित बनाने के विषय में भी उन्हें पूरा ज्ञान था।
- वेदों व शास्त्रों में इंगित बातों को ठीक से समझने व उन पर अधिक शोध की ओर ध्यान देना भी अपेक्षित है। ■

'दुग्ध सरिता' का अभियान, संपन्न बनें डेरी किसान

लेखकों से निवेदन

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा लोकप्रिय द्विमासिक पत्रिका 'दुग्ध सरिता' के प्रकाशन का शुभारंभ एक अभियान के रूप में किया गया है। इसका उद्देश्य नयी जानकारियों और उपयोगी सूचनाओं को डेरी किसानों, डेरी उद्यमियों तथा डेरी व्यवसायियों तक पहुंचाकर उनकी सकल आमदनी को बढ़ाना तथा डेरी सैक्टर का विकास करना है। यदि आप डेरी वैज्ञानिक, डेरी किसान, डेरी उद्यमी, डेरी सहकारिता या डेरी सैक्टर से जुड़े हैं तो हमारा अनुरोध है कि 'दुग्ध सरिता' में अपना लेखकीय योगदान देकर हमारे अभियान में भागीदार बनें और उसे सफल बनाएं।

आप हमें जानकारीपूर्ण सचित्र लेख, अपने सकारात्मक अनुभव, सफलता की कहानियां, केस स्टडीज़ तथा अन्य उपयोगी जानकारी प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। बस गुजारिश सिर्फ इतनी है कि यह सामग्री सरल और सहज भाषा में तथा हमारे लक्ष्य वर्ग के लिए उपयोगी हो। हम अधिकतम 2,000 शब्दों तक की रचनाओं का स्वागत करते हैं और 500 शब्दों से कम के आलेखों को संक्षिप्त रूप में प्रकाशित करने की व्यवस्था है। आपके द्वारा भेजे गये आलेखों को तकनीकी मूल्यांकन के उपरांत प्रकाशित किया जाएगा और इस संबंध में संपादक मंडल का निर्णय अंतिम तथा अनिवार्य रूप से मान्य होगा। हमारे लिए आपका योगदान अमूल्य है, परंतु प्रकाशित रचनाओं पर एक सांकेतिक धनराशि मानदेय के रूप में प्रदान की जाती है। आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

- *कृपया अपनी रचनाएं कृतिदेव 016 फोंट में ई–मेल करें। हमारा ई–मेल पता है : dsarita.ida@gmail.com*
- *रचनाओं के साथ बेहतर गुणवत्ता के और सार्थक चित्रों को कैप्शन के साथ .jpg फार्मेट में भेजें।*

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

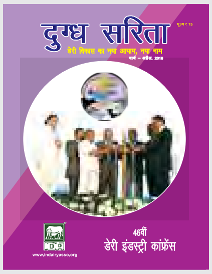

इंडियन डेरी एसोसिएशन का प्रकाशन

दुग्ध सरिता
(द्विमासिक पत्रिका)
अंकों की संख्या : 6
वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–
कीमत रु. 75/– प्रति अंक
साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :

दुग्ध सरिता विवरण.../एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या [ ]

(कृपया 'टिक' करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम...

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए)..

पता...

शहर...

राज्य..पिन कोड..ई–मेल...

फोन...मोबाइल...

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं..

बैंक...इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी..तारीख......................................राशि...........................)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।
सेक्रेटरी (एस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022
फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indairyasso.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **SYNB0009009**
बैंक : सिंडिकेट बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

2018

पशुपालक

मार्च

1. इस महीने गर्म मौसम की वजह से होने वाले रोगों की रोकथाम के लिए उचित देखभाल और सही उपाय करने की जरूरत है ।

2. यदि मच्छर, मक्खी, टिक्स वगैरह की संख्या बढ़ रही है तो इनके द्वारा फैलने वाले रोगों की रोकथाम के लिए सही कदम उठाने चाहिए ।

3. इस समय पशुओं को जॉन्स रोग होने की संभावना अधिक होती है । इसके तुरंत इलाज की व्यवस्था करनी चाहिए ।

4. यदि पशु के दूध उत्पादन में कमी आ रही हो तो उसके दूध और मूत्र की चिकित्सीय जांच करवानी चाहिए ।

5. अल्फाल्फा और बरसीम क्लोवर तथा जई जैसी चारा फसलों की क्रमशः हर 20 दिन पर और 12–14 दिन पर सिंचाई करें। गर्मी के मौसम में मक्का, बाजरा और ज्वार की बुआई हरे चारे के लिए करें ।

6. गर्भवती पशुओं में प्यूरपेरल बुखार की रोकथाम के लिए उन्हें हर रोज 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण आहार में दें । इससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाएगी ।

7. संकर नेपियर और गिनी घास जैसी बहुवर्षीय घासों की तैयार खेत में रोपाई करें।

8. उपलब्ध हरे चारे से साइलेज बनाने की तैयारी करें । गर्मियों में हमें चारे की कमी ना होने दें ।

2018

क कैलेंडर

अप्रैल

1 इस महीने तापमान अधिक बढ़ सकता है, जिससे पशु के शरीर में पानी और लवणों की कमी हो सकती है, भूख कम हो सकती है और उत्पादन में कमी आ सकती है । इसलिए पशुओं को ऊंचे तापमान से बचाने के सभी उपाय करें ।

2 पशुओं को दिन में कम से कम चार बार पानी पिलाएं और उनका पानी का बर्तन साफ और भरा हुआ रखें ।

3 इस समय डेरी पशुओं में मैस्टीटाइटिस रोग के लक्षण पनप सकते हैं । इसके तुरंत उपचार की व्यवस्था होनी चाहिए ।

4 छह महीने से अधिक के गर्भवती पशुओं के लिए अतिरिक्त आहार की व्यवस्था होनी चाहिए ।

5 इस समय पशुओं को अक्सर पाइका नामक रोग हो जाता है । इससे बचाव के लिए खनिज ब्लॉक्स में लवणों का घोल मिलाएं । मक्का, बाजरा और ज्वार की बोई गयी फसल की 45–50 दिन बाद कटाई करें ।

6 सामुदायिक प्रयासों से सुनिश्चित करें कि लोग मरे हुए पशुओं को चारागाह में ना फेकें । यदि जीवित पशु इसे खा लेते हैं तो बोटुलिज्म नामक रोग हो जाता है, जो लाइलाज है और रोगी पशु दम तोड़ देता है ।

7 गर्मी के कारण अकसर नर पशु उत्तेजित हो जाते हैं, जिसके लक्षण रात में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं । पशुपालकों को इस स्थिति का ध्यान रखना चाहिए । पशुओं को छायादार स्थान में रखें और दोपहर में उन्हें आराम करने दें ।

सौजन्य
पशुपालक कैलेंडर, पशुपालन, डेरी और मात्स्यिकी विभाग,
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाए

RATE CARD — DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion Rs.	Inaugural Offer Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000

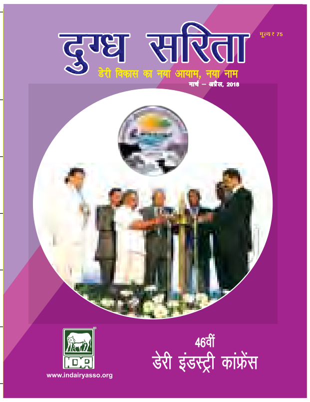

* Fifth colour: extra charges will be levied.

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — **Height :** 26.5 cm; **Width:** 20.5 cm

Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: **ida.adv@gmail.com** in PDF & JPG **OR** CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: ***Name:*** *Indian Dairy Association;* ***SB a/c No:*** *90562170000024;* ***IFSC:*** *SYNB0009009;* ***Bank:*** *Syndicate Bank;* ***Branch Address:*** *Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.*

Contact for Ads

Mr. Narendra Kumar Pandey
Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association

IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022
Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237 Fax: 91-11-26174719
E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indairyasso.org

पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी

गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर के हरे–भरे परिसर में 24 से 27 फरवरी, 2018 को एक विशाल अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें खेती–किसानी से लेकर पशुपालन तक की नयी तकनीकों का प्रदर्शन किया गया और विशाल संख्या में आये किसानों तथा पशुपालकों को सीधे वैज्ञानिकों ने जानकारी दी। डेरी किसानों के लिए डेरी फार्मिंग और प्रसंस्करण से जुड़ी नयी जानकारियां प्राप्त करने का यह एक सुनहरा अवसर था। समापन समारोह में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने प्रदर्शनी की सराहना करते हुए कृषि प्रसार के लिए इस प्रकार की प्रदर्शनियों की आवश्यकता पर बल दिया और विश्वविद्यालय के विकास के लिए 25 करोड़ रुपये की अनुदान राशि देने की घोषणा की। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने देश के और विशेष रूप से उत्तराखंड के किसानों के विकास में विश्वविद्यालय के योगदान की सराहना की। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. ए. के. मिश्रा ने पंतनगर में किसान मेले की परंपरा का उल्लेख करते हुए गणमान्य अतिथियों तथा भारी संख्या में आये किसानों का आभार व्यक्त किया। ■

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह द्वारा किसान मेला का उद्घाटन (ऊपर) तथा प्रदर्शनी का अवलोकन

देखभाल

गर्मी से दुधारू पशुओं का बचाव कैसे करें

डॉ. राजेन्द्र सिंह
लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

सिकुड़ती जमीन और बढ़ते परिवारों के खर्च किसान के लिए आवश्यक कर देते हैं कि वह अपने पशुधन से अधिकतम आय व लाभ प्राप्त करें। इसके लिए पशु को अधिक गर्मी व अन्य दूषित वातावरण से बचाकर अच्छे व्यवहार के साथ रखना आवश्यक है, ताकि पशु की ऊर्जा गर्मी से लड़ने में व्यर्थ न हो और यह ऊर्जा आदर के साथ उत्पादन बढ़ाने में लगे।

गर्मी के मौसम में वातावरण का तापमान काफी बढ़ जाता है। उत्तर भारत में कई बार तो यह तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक चला जाता है, जो पशु के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। हम जानते हैं कि गाय व भैंस के शरीर का सामान्य तापमान 101.5 डिग्री फारेनहाइट व 98.3 – 103 डिग्री फारेनहाइट क्रमशः सारे साल रहता है। पशुओं के अच्छे उत्पादन के लिए सामान्यतः 5 से 25 डिग्री सेल्सियस का तापमान अनुकूल है। इस तापमान से अधिक और कम तापमान से बचाव के लिए हमें प्रबन्ध करना आवश्यक है। हम जानते हैं कि गर्मी के मौसम में प्रतिकूल तापमान से प्रभावित होने के कारण पशुओं का दूध उत्पादन कम हो जाता है। अगर हम अपने पशुओं के लिए हरे चारे व संतुलित आहार का प्रबन्ध, पानी व अन्य देखभाल ठीक से करेंगे तो गर्मी के मौसम में भी दुधारू पशुओं से पूरा उत्पादन ले सकते हैं।

हरे चारे व सन्तुलित आहार का प्रबन्ध

गर्मी के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है, विशेषतौर से मई व जून के महीनों में। यदि ठीक प्रकार से फसल चक्र अपनाकर हरे चारे की व्यवस्था करेंगे तो गर्मी

विशेष देखभाल

- गर्मी के मौसम में पशुओं को कम से कम चार–पांच बार स्वच्छ व ठंडा पानी पिलाएं तथा बचा हुआ पानी पशु (भैंस) के शरीर व सिर पर डालें।
- पशुओं की चारे की खोर को रात को चारे से भरकर रखें क्योंकि गर्मी के मौसम में पशु रात को चरता है तथा तूड़ी व सूखा चारा खासतौर से रात को खिलाएं ताकि पशु के शरीर के अन्दर कम गर्मी पैदा हो।
- रोजाना सुबह मादा पशुओं की जांच करें, कहीं आपका पशु गर्मी में तो नहीं आया, अगर आया हो तो उसे हमेशा टूटते आम्बे में (आखिरी आठ घण्टे) में कृत्रिम गर्भाधान करवाएं या उत्तम सांड से मिलवाएं।
- गर्मी के मौसम में पशुओं को छायादार पेड़ों के नीचे बांधें जिससे पशु को सीधी गर्मी ना लगे। पशुघर के अन्दर पशु को गर्मी से बचाने के लिए रखते हैं तो घर के अन्दर हवा का आवागमन होना जरूरी है, नही तो गैसों की उत्पत्ति हो जाएगी जिससे पशु का स्वास्थ्य प्रभावित होगा। इसके साथ–साथ पशु घर के अन्दर रहने के लिए पूरा स्थान दें। भैंस को 4 वर्गमीटर तथा गाय को 3.5 वर्गमीटर।
- अगर लू चल रही हो तो पशु घर की खिड़कियों पर गीली बोरी या टाट इत्यादि लगा दें और ध्यान रखें कि बोरी हो या टाट खिड़की से चिपके नहीं।
- यदि पशु को लू लग गई है तो अधिक मात्रा में ठण्डा पानी पिलाएं तथा साथ में नमक व चीनी का घोल दें। इसके बाद यदि दिक्कत है तो पशु चिकित्सक की सेवा लें।
- गर्मी के मौसम में भैंसों को जोहड़ में लिटाना व संकर नस्ल की गायों को नहलाना बहुत अच्छा व फायदेमंद होता है, परन्तु ध्यान रखें स्वच्छ, साफ व ठण्डा पानी पशु को घर में पिलाकर जोहड़ में भेजें तथा 12 से 4 बजे के बीच भैंसों को जोहड़ से बाहर न निकालें। इस समय के दौरान भैंसों को बाहर निकालने से उनको सन्निपात हो सकता है। पशुओं को बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण का कार्यक्रम अपनाएं जिससे पशुओं को मुंह, खुर, गल–घोंटू इत्यादि बीमारियों से बचाया जा सके। इसके साथ–साथ परजीवियों जैसे कि मच्छर, मक्खी व चीचड़ इत्यादि का उपचार करें।

के मौसम में भी हम अपने पशुओं के लिए हरे चारे प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही मार्च और अप्रैल के महीने में अधिक बरसीम को 'हे' बनाकर संरक्षित करने और चारे की कमी वाले समय में खिलाकर हरे चारों की पूर्ति कर सकते हैं।

संतुलित आहार उसे कहा जाता है, जिसमें प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज तत्व व विटामिन आदि आवश्यकतानुसार उपलब्ध हों। सौ किलो संतुलित आहार इस प्रकार से बनाएं – गेहूं, मक्का व बाजरा आदि अनाज 32 किलोग्राम, सरसों की खल 10 किलोग्राम, बिनौले की खल 10 किलोग्राम, दालों की चूरी 10 किलोग्राम, चोकर 25 किलोग्राम, खनिज मिश्रण 2 किलोग्राम व साधारण नमक एक किलोग्राम। गर्मी के मौसम में इसमें प्रोटीन की मात्रा यानी सरसों की खल आदि की मात्रा 30 से 35 प्रतिशत बढ़ा दें। इस प्रकार हम

स्नान का आनंद, गर्मी से रक्षा

गर्मी के मौसम में हरे चारे व संतुलित आहार तथा विशेष प्रोटीनयुक्त चारा खिलाने से पशुओं को गर्मी से बचाकर दूध उत्पादन बनाए रख सकते हैं।

पशु घर की उत्तम व्यवस्था से अधिक लाभ

पानी है जरूरी

गर्मी के मौसम में अकसर पशु शरीर में पानी की कमी हो जाती है। इसके लिए हमें विशेष ध्यान रखकर पशु के शरीर की पानी की पूर्ति लगातार करनी चाहिए। हम जानते हैं कि दूध के अन्दर पानी की मात्रा तकरीबन 87 प्रतिशत होती है। अगर पशु के शरीर के अन्दर पानी की कमी होगी तो दूध उत्पादन निश्चित रूप से कम हो जाएगा। पशु शरीर के हर 100 किलोग्राम वजन पर तकरीबन 5 लीटर पानी की जरूरत होती है। पशु पालक भाइयों को सलाह दी जाती है कि पशु के शरीर का वजन का हिसाब लगाकर पानी की पूर्ति करें। तकरीबन हमारी दूधारू भैंसों का वजन 500 से 600 किलोग्राम प्रति भैंस होता है। इसके हिसाब से गणना करके पानी की पूर्ति करनी चाहिए। दुधारू पशु को एक किलोग्राम दूध पैदा करने के लिए तकरीबन एक किलोग्राम पानी की जरूरत होती है। इसलिए आप अपने पशु का दूध उत्पादन का हिसाब लगाकर उससे भी अधिक पानी की पूर्ति करें। पशु को प्रति किलोग्राम सूखा चारा व बाखर खिलाने पर 5 से 8 लीटर पानी की जरूरत होती है तथा हरा चारा बाखर के साथ खिलाने पर पानी की जरूरत तकरीबन 3 से 5 लीटर की जरूरत पड़ेगी। इस प्रकार खिलाए चारों की किस्म (सूखा –हरा) का हिसाब लगाकर पानी की पूर्ति करें। अगर हमने बरसीम खिलाई है तो उससे पशु को तकरीबन 70 से 80 प्रतिशत पानी मिलता है, इसी प्रकार अगर हरी ज्वार खिलाई है तो तकरीबन 55 से 60 प्रतिशत पानी मिलता है। इसलिए बताई गई जरूरतों को ध्यान में रखकर हम कह सकते हैं कि गर्मी के मौसम में अच्छा दूध उत्पादन लेने के लिए अच्छी दूधारू भैंस जिसका दूध उत्पादन करीबन 15 से 20 किलोग्राम प्रतिदिन हो, उसे 70 से 80 लीटर स्वच्छ व ठंडा पानी गर्मी के मौसम में 24 घण्टे में पिलाना चाहिए। इससे उसके दूध उत्पादन में कमी नहीं आएगी। ■

सेहत

किसिम - किसिम के दूध

मनीष मोहन गोरे[1] एवं राकेश कुमार[2]

[1]विज्ञान प्रसार, ए–50, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर– 62, नोएडा 201309 (उत्तर प्रदेश)

[2]वरीय वैज्ञानिक सूक्ष्म जीव विज्ञान, संजय गाँधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान

बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना

दूध को प्राचीन समय से ही सर्वोत्तम आहार माना जाता रहा है। दूध एवं दुग्ध उत्पाद के हमारे स्वास्थ्य में अनगिनत फायदे हैं। विश्व भर में लोगों को प्रोटीन की 13 प्रतिशत आवश्यकता दुग्ध उत्पादों से ही पूरी होती है। यह प्रोटीन, कैल्शियम, फैट, लैक्टोज, मिनरल्स का अच्छा स्रोत है, जो जीवधारी के शारीरिक–मानसिक पोषण के लिए जरूरी होता है। दूध का सेवन ठोस आहार ग्रहण से पूर्व शिशुओं के विकास को सुनिश्चित करता है। शैशवावस्था में हड्डियों, मांसपेशियों और शरीर के बाकी हिस्सों के विकास के लिए प्रोटीन तथा कैल्शियम बहुत जरूरी होते हैं। कैल्शियम का प्राथमिक कार्य हड्डियों एवं मसूढ़ों का विकास और मरम्मत करना होता है। दूध में अनेक विटामिन के अलावा मैग्नीशियम और फास्फोरस की अल्प मात्रा भी पाई जाती है। परंतु विभिन्न प्रकार के दूध में यह मात्रा भिन्न–भिन्न हो सकती है। आइए, जानते हैं दूध के विभिन्न प्रकारों की विशेषताओं के बारे में ।

साधारणतया दूध में 85 प्रतिशत जल होता है और शेष भाग में ठोस तत्व यानी खनिज एवं वसा होता है। गाय–भैंस के अलावा बाजार में विभिन्न कंपनियों के पैक्ड दूध भी उपलब्ध होते हैं। 100 मिली. गाय के दूध में 3.2 ग्राम प्रोटीन, 4.1 ग्राम फैट, 67 किलो कैलोरी ऊर्जा, 172 मि.ग्रा. कैल्शियम, 120 मि.ग्रा. फास्फोरस, 73 मि.ग्रा. सोडियम और 120 मि.ग्रा. पोटैशियम होता है। ये सब पोषक तत्व हमारे मांसपेशियों और हड्डियों के गठन में अहम भूमिका निभाते हैं। प्रोटीन एंटीबॉडीज के रूप में काम करता है और हमें इन्फेक्शन से बचाता है। दूध का पीएच मान 6.6 तथा क्वथनांक 100 से 115 डिग्री सेल्सियस होता है। भैंस के दूध में गाय की दूध की तुलना में सोडियम–पोटैशियम कम और प्रोटीन, फैट, एनर्जी, कैल्शियम एवं फॉस्फोरस ज्यादा होता है। दूध में आयरन, विटामिन–सी एवं एंटीआक्सीडेंट

आदि बहुत कम होते हैं। इसके अलावा दूध में कई एंजाइम और कुछ जीवित रक्त कोशिकाएं भी हो सकती हैं। दूध में मनुष्य शरीर के लिए पोषक तत्व उचित मात्रा मे विद्यमान रहते हैं। दूध की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक पूर्ण पुष्टिकारक आहार होते हुए भी बहुत जल्दी हजम हो जाता है। दूध किसी भी हालत में नुकसान नहीं करता और हर हालत में गुणकारी होता है।

गाय का दूध

गाय के दूध में प्रति ग्राम 3.14 मि.ग्रा. कोलेस्ट्रोल होता है। चिकित्सकों का मानना है कि गाय का दूध भैंस की तुलना में दिमाग के लिए अच्छा है, पर इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के अनुसार कुछ स्टडी बताती हैं कि गाय के दूध से बेहतर है भैंस का दूध, क्योकि इसमें कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम और मिनरल ज्यादा होता है। गाय के दूध में कार्बोहाइड्रेट लेक्टोज की मात्रा 4 प्रतिशत तथा वसा की मात्रा 4.5 प्रतिशत होती है।

दूध-एक पूर्ण और पोषक आहार

भैंस का दूध

भैंस के दूध में प्रति ग्राम 0.65 मि.ग्रा. कोलेस्ट्रोल होता है। भैंस के दूध में गाय की तुलना में 92 प्रतिशत कैल्शियम, 37 प्रतिशत आयरन, 118 प्रतिशत फास्फोरस ज्यादा होता है। भैंस के दूध में कार्बोहाइड्रेट लेक्टोज की मात्रा 4.9 प्रतिशत तथा वसा की मात्रा 7 प्रतिशत होती है।

दूध सम्पूर्ण आहार के साथ–साथ जल्दी खराब हो जाने वाला पेय है। इसलिए दूध के स्वरूप को बदल कर हम इसे ज्यादा दिनों तक रख सकते हैं, साथ ही साथ दूध के मूल्यवर्धन के द्वारा ज्यादा आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। दूध से उत्पादित पदार्थों के बारे में जानने से पहले हमें यह जानकारी हासिल करना जरूरी है कि दूध की मांग किस रूप में ज्यादा है। दूध के मुख्य स्रोत गाय, भैंस, बकरी और ऊँट होते हैं। बाजार में उपलब्ध डिब्बाबंद दूध को इन्ही दूधों को मिलाकर तैयार किया जाता है। दुकानों पर अनेक प्रकार के दूध की उपलब्धता हमें देखने को मिलती है। दूध में वसा की मात्रा के आधार पर इसके कई प्रकार होते हैं।

पैक्ड दूध

इस तरह का दूध मदर डेयरी, अमूल, पराग, सुधा, वीटा, आँचल जैसी कंपनियां सप्लाई करती हैं। इसमें विटामिन–ए, लौह और कैल्शियम ऊपर से भी मिलाया जाता है। इसमें भी कई तरह के दूध जैसे क्रीम, टोंड, डबल टोंड और फ्लेवर्ड मिल्क होते हैं। फुल क्रीम में पूर्ण मलाई होता है। इन सभी की अपनी उपयोगिता है, पर चिकित्सकों की राय के अनुसार बच्चों के लिए फुल क्रीम दूध बेहतर है, तो बड़ों के लिए कम फैट वाला दूध।

दूध का प्रसंस्करण

दूध पौष्टिता से भरपूर एक प्रकृतिक पेय पदार्थ है। इसलिए बचाव के उपाय नहीं करने पर इसमें सूक्ष्म जीवों के संक्रमण का खतरा बना रहता है। इसके लिए हीट ट्रीटमेंट की प्रक्रिया अपनाई जाती है जिसके द्वारा रोगकारक सूक्ष्मजीवों को समाप्त किया जाता है।

पाश्चुराइजेशनः भारत सहित दुनिया के सभी देशों में दूध को सूक्ष्मजीवों के संक्रमण से बचाने के लिए उसका पाश्चुराइजेशन किया जाता है। इसमें दूध को 30 मिनट तक 63 डिग्री सेल्सियस (145 डिग्री फारेनाहाइट) तापमान पर या 15 सेकंड तक 72 डिग्री सेल्सियस (162 डिग्री

फारेनहाइट) तापमान पर गर्म किया जाता है। यदि तापमान को और बढ़ाया जाता है तो समय को उसके सापेक्ष कम कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में दूध में मौजूद सूक्ष्मजीव नष्ट हो जाते हैं और दूध की भंडारण अवधि बढ़ जाती है।

निर्जीवीकरण: निर्जीवीकरण का तात्पर्य दूध को गर्म करके जीवाणु रहित करना है। इसके लिए दूध को 30 मिनट तक 93.3^0 से. –94.4^0 से. पर रखते हैं। यद्यपि इसमें दूध पूर्णतया निर्जीवीकृत तो नहीं हो पाता, फिर भी जीवाणुओं की पर्याप्त रूप से मात्रा कम हो जाती है। इसमें दूध को लम्बे समय तक संग्रहित कर रखा जा सकता है।

स्वास्थ्यवर्धक दूध

समांगीकरण : इस प्रक्रिया में यांत्रिक विधि द्वारा दूध की वसा गोलिकाओं तथा दूध के सीरम को एक समान आकार वाले छोटे–छोटे कणों में विभाजित किया जाता है ताकि दूध और वसा एक में समाहित रह सके तथा अलग–अलग हों। ताकि दूध संग्रह करते समय उसके ऊपर क्रीम लेयर के रूप में एकत्रित न हो सके और सारे दूध में समान रूप से बिखरी रह सकें। इसके लिए पहले दूध को 37^0से. से 48^0से. ताप पर गर्म करने के बाद इसका तापमान 60^0से. से 65^0से. कर दिया जाता है और इस ताप पर इसको समांगीकरण यंत्र द्वारा 2000 से 2500 पौण्ड प्रति वर्ग इंच का दबाव डालते हैं। इस दूध को पुनः 1,10000 इंच के छिद्र से बाहर निकालते हैं। इससे वसा गोलिकाएँ छोटे–छोटे कणों में विभक्त हो जाती हैं। इस प्रक्रिया का उपयोग फ्लेवर्ड दूध बनाने के लिए उपयोगी होता है, जैसे सोया मिल्क, स्ट्रॉबेरी फ्लेवर्ड मिल्क, मिल्क शेक, आइसक्रीम मिक्स इत्यादि।

दूध के प्रकार

मानकीकृत दूध : यह दूध गाय, भैंस, भेड़ या बकरी के दूध या इनको आपस में मिलाकर बनाया जाता है। इसमें दुग्ध वसा 4.5 प्रतिशत पाई जाती हैं। इस दूध का पाश्चुरीकरण करना आवश्यक है। साथ ही इसका फास्फेटेज परीक्षण भी उचित विधि से होना चाहिए। इसे एलकेलाइन फास्फेटेज परीक्षण कहते हैं। दरअसल एल्केलाइन फास्फेटेज एक एंजाइम है, जो प्राकृतिक रूप से दूध में मौजूद रहता है। लेकिन पाश्चुराइजेशन के तापमान तक पहुंचकर यह एंजाइम अकसर नष्ट हो जाता है और इस तापमान से पहले ही बाकी सूक्ष्मजीव नष्ट हो जाते हैं। इसलिए फास्फेटेज परीक्षण इस बात का सूचक है कि दूध का उचित प्रकार से पाश्चुराइजेशन हो गया है और दूध सेवन के लिहाज से पूरी तरह सुरक्षित है।

समग्र दूधः यह प्राकृतिक दूध होता है, जिसमें ना तो कुछ मिलाया और न ही कुछ निकाला जाता है। इसे फुल क्रीम दूध कहते हैं और इसमें भरपूर मलाई और वसा पाई जाती है। बच्चों, किशोरों और बॉडी बिल्डरों के लिए यह उत्तम दूध होता है। संक्रमण से बचाव के लिए इस दूध की पैकिंग सीलिंग पुख्ता होनी चाहिए। मानकीकृत दूध की तरह समग्र दूध में भी पाश्चुरीकरण जरूरी है और फास्फेटेज परीक्षण होना भी आवश्यक है।

टोंड दूधः इस प्रकार के दूध में गाय या भैंस के दूध को मिलाकर या फिर दोनों दूध को ताजे मलाईरहित दूध (स्किम्ड मिल्क) के साथ मिलाकर बनाया जाता है। इसमें दुग्ध वसा 3 प्रतिशत होती है। पाश्चुरीकरण और फास्फेटेज

ए1 और ए2 दूध की खूबियां

पिछले कुछ वर्षो से उपभोक्ताओं के बीच ए1 एवं ए2 दूध चर्चा का विषय बना हुआ है। वर्तमान में शोध से पाया गया है कि ए2 टाइप दूध ए1 टाइप दूध से कई गुना ज्यादा स्वास्थवर्धक है। देसी नस्ल की गायों में ए2 टाइप दूध में प्रोटीन प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। यह कई रोगों जैसे हृदय रोग, मधुमेह एवं नयूरोलॉजिकल डिसऑर्डर से बचाता है एवं शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता पैदा करता है।

दूध में पाए जाने वाले प्रोटीन का 80 प्रतिशत केसिन होता है। दूध में कई तरह के केसिन होते हैं और गाय के दूध में दूसरा सबसे सामान्य केसिन बीटा केसिन है। अब इस बीटा केसिन के भी अनेक प्रकार होते हैं। इनमें से दो प्रमुख बीटा केसिन हैं ए1 और ए2 बीटा केसिन। ए1 बीटा केसिन सभी व्यावसायिक तौर पर तैयार दूध में पाए जा सकते हैं। वहीं दूसरी तरफ ए2 बीटा केसिन आम तौर पर पुरानी नस्लों की गाय से निकाले दूध में पाया जाता है। ए1 और ए2 बीटा केसिन का मुख्य फर्क दूध के अमीनो अम्ल की श्रृंखला संख्या 67 में निहित होता है। इस श्रृंखला पर ए1 बीटा केसिन हिस्टीडीन से जुड़ा होता है जबकि ए2 बीटा केसिन प्रोलीन से। ए1 बीटा केसिन के साथ हिस्टीडीन का जुड़ाव म्यूटेशन के कारण होता है और यह माना जाता हैं कि मनुष्यों के स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर होता है। जबकि ए2 बीटा केसिन को सेहतमंद विकल्प के तौर पर देखा जाता है। इस दिशा में अनुसंधान जारी हैं।

आज सम्पूर्ण विश्व में यह चेतना आ गई है कि बाल्यावस्था में बच्चों को केवल ए2 दूध ही देना चाहिए। विश्व बाजार में न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया, जापान और अब अमेरिका में प्रमाणित ए2 दूध के दाम साधारण ए1 डेरी दूध के दाम से कहीं अधिक हैं। ए2 दूध देने वाली गाय विश्व में सब से अधिक भारत में पाई जाती हैं। यदि हमारी देसी गोपालन की नीतियों को समाज और शासन का प्रोत्साहन मिलता है तो सम्पूर्ण विश्व के लिए ए2 दूध आधारित बालाहार का निर्यात भारत से किया जा सकता है।

परीक्षण से जुड़े मानक इसके लिए भी समग्र या फुल क्रीम दूध के समान ही होते हैं।

डबल टोंड या लो फैट दूध

डबल टोंड दूध को भी टोंड दूध की तरह गाय या भैंस के दूध को मिलाकर या फिर दोनों दूध को ताजे मलाईरहित दूध (स्किम्ड मिल्क) के साथ मिलाकर बनाया जाता है। इस दूध में से मलााई को दो बार छान लिया जाता है। इसलिए इसमें दुग्ध वसा बहुत कम (1.5 प्रतिशत) होती है। यह दूध ऐसे लोगों के लिए उपयुक्त है जो कम कैलोरी लेने के साथ अपना वजन कम करना चाहते हैं।

स्किम्ड या नो फैट दूध

इस प्रकार के दूध में दुग्ध वसा और मलाई को पूरी तरह या यथासंभव निकाल दिया जाता है। किसी भी स्थिति में इस प्रकार के दूध में 0.05 प्रतिशत अधिक दुग्ध वसा मौजूद नहीं होती। एक कप स्किम्ड दूध में वसा की मात्रा 0.5 ग्रम से भी कम होती है। वसा की कम मात्रा के कारण इस दूध से कम कैलोरी मिलता है। इसलिए इसकी प्रौढ़ और वृद्ध जनों के लिए अनुशंसा होती है। पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों को इस दूध की कतई अनुशंसा नहीं की जाती है, क्योंकि उन्हें विकास के लिए अतिरिक्त कैलोरी की जरूरत रहती है।

स्टरलाइज्ड मिल्क

गाय या भैंस के दूध को लगातार 115 डिग्री सेल्सियस पर 15 मिनट तक रखा जाता है। इससे इसमें मौजूद कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इस दूध को कमरे के तापमान पर 80–85 दिनों तक रखा जा सकता हैं। यह दूध वैसी जगहों के लिए है, जहां दूध पहुंचने में परेशानी हो।

स्टैंडर्डाइज्ड मिल्क

यह भैंस के दूध और स्किम्ड मिल्क को मिला कर बनाया जाता है। इसमें फैट की मात्रा 4.5 प्रतिशत तक रखी जाती है। कमजोरी, लो कैल्शियम, लो फैट और बीएमआई 18 से कम हो, तो यह दूध फायदेमंद है।

फ्लेवर्ड दूध

पाश्चुरीकृत दूध में थोड़ा मीठा एवं सुगन्ध मिलाकार फ्लेवर्ड दूध का निर्माण किया जाता है, फिर इसे बोतलों में भरकर बाजार में बेचा जाता है। इसका पोषक मान पाश्चुरीकृत दूध से ज्यादा होता है, क्योंकि इसमें चीनी एवं सुगन्ध दोनों अलग से मिलाया जाता है। इस दूध में चॉकलेट, कॉफी, फूड कलर, केन शुगर इत्यादि मिलाया जाता है।

प्रबलीकृत या विटामिन युक्त दूध

दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों में विटामिन–डी की मात्रा मिलाकर इसकी पोषण महत्ता अधिक की जाती है। कुछ देशों में शुद्ध दूध की जगह सप्रेटा दूध ही बच्चों को पीने को मिलता है। ऐसी दशा में बच्चों के शरीर में विटामिन–ए की भारी कमी हो जाती हैं। सप्रेटा दूध में विटामिन–ए एवं विटामिन–डी मिलाकर इसकी गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार विटामिनयुक्त दूध को प्रबलीकृत दूध कहते हैं।

अल्ट्रा उच्च तापमान प्रसंस्करित दूध

अल्ट्रा उच्च तापमान दूध एक उच्च गुणवत्ता वाला उत्पाद है, जिसे सील पैकेज में रख कर कई महीनों तक कमरे के तापमान पर संग्रहण किया जा सकता है। अल्ट्रा उच्च तापमान प्रसंस्करित दूध ताजा, प्राकृतिक और केवल सर्वोतम गुणवत्ता युक्त दूध से एक विशेष तकनीक से बनाया जाता है, जिसमें दूध एक विशेष तरीके से सॉफ्ट गर्मी उपचार से गुजरता है। इस उपचार के दौरान दूध को कुछ ही सेकंड में गरम और ठंडा किया जाता है, जिसके बाद इसे पूर्णतया गत्ते के पैकेज में रखा जाता है। उच्च तापमान प्रसंस्करित दूध में एक अत्यंत छोटी अवधि के लिए दूध को चारों ओर से 1–2 सेकंड के लिए एक तापमान 135 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक तापमान जो हर तरह के जीवाणुओं को मारने के लिए आवश्यक है, दूध को गरम किया जाता है। बहुत सारे शोध करने के उपरान्त यह पता चला है कि अल्ट्रा उच्च तापमान दूध की संरचना इस तरह की है कि विटामिन ए, सी, डी, समूह बी, कैल्शियम, मैग्नीशियम, मैंगनीज, फास्फोरस, जिंक, लोहा, कोबाल्ट, पोटेशियम, एल्यूमीनियम, सोडियम और गंधक के रूप में लगभग सभी उपयोगी तत्व बरकरार रहते हैं। यह प्रक्रिया फल रस, क्रीम, सोया दूध, दही, शराब, सूप और हनी के लिए भी इस्तेमाल की जाती है। अल्ट्रा उच्च तापमान उत्पाद पूरी तरह से अपने सभी उपयोगी पदार्थों को कैल्शियम सहित संरक्षित करता है, जो कि मानव शरीर के लिए महत्वपूर्ण हैं।

विशेषताएं

- दिल के काम को दुरूस्त करता है और रक्त वाहिकाओं को मजबूत करता है ।
- शरीर में चयापचय प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है ।
- इसमें मौजूद कैल्शियम हड्डियां और दांतों की ताकत को प्रभावित करती हैं।
- पाचन तंत्र के सामान्य कामकाज के लिए उपयोगी है।
- उत्पादन और एंटीसेप्टिक पैकेजिंग के एक अनूठे तरीके से यह पेय छोटे बच्चों द्वारा भी खाया जा सकता है ।
- तंत्रिका तंत्र के काम को सामान्यीकृत करता है, तनाव, अवसाद और अनिद्रा के दौरान लाभकारी होता है।

अल्ट्रा उच्च तापमान दूध हानिकारक हो सकता है, यदि व्यक्ति में उत्पाद को बनाने वाले घटकों में से किसी एक घटक के प्रति असहिष्णुता है। इन मामलों में दूध से एलर्जी की प्रतिक्रिया हो सकती है। ■

जानकारी

पशुपालकों की सेवा में आईवीआरआई

रूपसी तिवारी, त्रिवेणी दत्त एवं पुनीत कुमार
भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर, बरेली 243122

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) सन् 1889 से ही पशुचिकित्सा के क्षेत्र में सतत् शोध, शिक्षण एवं प्रसार गतिविधियों में कार्यरत है। किसानों एवं पशुपालकों के लिए संस्थान की अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। ये सभी सेवाएं मुख्य रूप से 'एटिक' अर्थात् कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र द्वारा प्रदान की जाती हैं। पशुपालकों को संस्थान में आने पर अलग–अलग विभागों में न जाकर सिर्फ एक ही विभाग में संपर्क करना पड़ता है एवं यहीं से उनकी समस्याओं का समाधान किया जाता है। यह एक 'सिंगल विन्डो डिलीवरी सिस्टम' पर आधारित व्यवस्था है ।

किसानों की तरह पशुपालकों को भी पशुओं की देखभाल, आहार, चिकित्सा एवं प्रजनन आदि से जुड़ी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनके वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करने के लिए आईवीआरआई में टेलीपरामर्श की सुविधा उपलब्ध है। इसमें मुख्यतः दो प्रकार की सुविधाएं हैं, जिनके लिए निम्न नंबरों पर कॉल किया जा सकता है:

1. **किसान काल सेंटर** : यह एक टेलीफोनिक सुविधा है जिसका देश भर में 1800–180–1551 नंबर है। इस नंबर पर किसान एवं पशुपालक फोन द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। । आईवीआरआई में किसान कॉल सेंटर का लेवल–2 नोड स्थित है, जो पशुपालन संबंधी समस्याओं का हल प्रदान करती है। यह एक निःशुल्क व्यवस्था है।

2. **आईवीआरआई हेल्पलाइन** : यह संस्थान की अपनी टेलीपरामर्श सुविधा हैं जिसका नंबर 0581–2311111 है। इस नंबर पर डायल करके पशुपालक सीधे आईवीआरआई से संपर्क कर बातचीत कर सकते हैं एवं अपनी समस्या का समाधान पा सकते हैं। बड़ी संख्या में पशुपालक इन दोनों सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। इसके अतिरिक्त पशुपालक संस्थान में आकर एवं विशेषज्ञों से स्वयं मिलकर भी समस्या का समाधान पा सकते हैं ।

आईसीटी से शिक्षण और प्रशिक्षण

संस्थान ने आईसीटी आधारित कई शिक्षण प्रणालियों का विकास किया है, जो पशुपालकों को अलग–अलग शिक्षण तकनीकियों द्वारा स्वयं सूचना तथा जानकारी प्राप्त करने में सहायता करती हैं। इनमें कुछ कंप्यूटर आधारित भी हैं जिनमें जानकारी मौखिक (छायाचित्र, एनीमेशन द्वारा) व लिखित रूप में दी गयी है। कुछ में जानकारी वीडियो द्वारा तथा कुछ में सिर्फ मौखिक रूप में दी गयी है। इसमें से प्रमुख हैं : पशुधन एवं कुक्कट रोग सूचना प्रणाली, बकरी स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना प्रणाली, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रश्नोत्तरी एवं कई प्रकार के पशु रोगों की आडियो सीडी आदि। ये सभी आईसीटी आधारित प्रशिक्षण पद्धतियां एटिक से प्राप्त की जा सकती हैं। साथ ही अब संस्थान मोबाइल एप्प विकसित कर रहा है जिनको डाउनलोड कर पशुपालक अपना लाभ बढ़ा सकते हैं एवं अपनी आय भी। मोबाइल एप्प आईवीआरआई – पशु प्रजनन को गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध कराया गया है।

एटिक की इन सेवाओं के अतिरिक्त संस्थान पशुपालकों के लिए कुछ अन्य सुविधाएं भी प्रदान करता है। इन सेवाओं में प्रमुख है रेफेरल पशु चिकित्सा पॉलीक्लीनिक, कृषि विज्ञान केंद्र एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई की सेवाएं। संस्थान का रेफरल पशु चिकित्सा पॉलीक्लीनिक पशुपालकों के लिए अनेक प्रकार की सुविधाएं प्रदान करता है। इन सुविधाओं में प्रमुख हैं रोगग्रस्त पशुओं का उपचार, पशुओं के लिए विशेषज्ञ नैदानिक सुविधाएं, गाय एवं भैंसों में कृत्रिम गर्भाधान तथा पशु स्वास्थ्य जांच एवं टीकाकरण। संस्थान का कृषि विज्ञान केंद्र किसानों, कृषक महिलाओं, ग्रामीण युवाओं तथा प्रसार कार्यकर्ताओं को अनेक कृषि एवं पशुपालन संबंधित विषयों में प्रशिक्षण देता है। इच्छुक पशुपालक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत रूप से अथवा टेलीफोन द्वारा आवेदन कर सकते हैं तथा अपना नाम पंजीकृत करा सकते हैं ।

पशुपालन संबंधी लोकप्रिय साहित्य

पशुपालकों को सामयिक सूचना एवं जानकारी सूचना प्रपत्रों द्वारा, प्रदर्शनी द्वारा और संस्थान में भ्रमण द्वारा प्रदान की जाती है। पशुपालकों के लिए सूचना साहित्य वर्ष भर तैयार किये जाते हैं जो सरल एवं स्थानीय हिंदी भाषा में बनाए जाते हैं। इनमें पशुपालन से संबंधित विभिन्न विषयों पर संपूर्ण जानकारी दी जाती है। ये मुख्यतः लीफलेट (1–2 पेज), फोल्डर (3–4पेज), मिनीकिट (8–16 पेज) एवं छोटी पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किये जाते हैं। एटिक में वर्तमान में करीब 30 से अधिक इस प्रकार के प्रपत्र हैं, जिन्हें पशुपालक एटिक द्वारा बहुत कम दरों में प्राप्त कर सकते हैं। कुछ मुख्य प्रपत्र जैसे विभिन्न पशुओं का वैज्ञानिक पालन (जैसे गाय, भैंस, बकरी एवं सूकर पालन), पशुओं के लिए उचित खानपान, पशुओं के लिए खनिज मिश्रण, पशुओं के स्वास्थ्य हेतु औषधियां, प्राथमिक चिकित्सा, पशु के विभिन्न रोग एवं निदान, पशु टीकाकरण, पशु उत्पाद एवं उपउत्पाद, पशु उत्पाद मूल्य संवर्धन तकनीकी, पशुओं का वैज्ञानिक प्रबंधन आदि हैं।

स्वास्थ्य शिविर से लाभ उठाते पशुपालक

पशु विज्ञान प्रदर्शनी और संस्थान भ्रमण

एटिक में संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों की एक विशाल प्रदर्शनी स्थायी रूप से लगायी गयी है, जिसका पशुपालक लाभ उठा सकते हैं। समय–समय पर जैसे–जैसे संस्थान में नवीन तकनीकी विकसित होती है, उसी क्रम में प्रदर्शनी के लिए नये–नये पैनल्स बनते रहते हैं। 'देखना

ही विश्वास करना है, इसी सिद्धांत को आधार मानकर पशुपालकों को एटिक द्वारा संस्थान के विभिन्न विभागों में भ्रमण कराने एवं जानकारी प्रदान करने की व्यवस्था की जाती है। संस्थान भ्रमण में मुख्यतः पशुपालकों को यहां के डेरी फार्म का भ्रमण करवाया जाता है। साथ ही यहां की चारा उत्पादन इकाई, कृषि विज्ञान केंद्र, वर्मीकम्पोस्ट इकाई, पॉलीक्लीनिक इत्यादि का भी भ्रमण करवाया जाता है, ताकि वे प्रत्यक्ष रूप से पशुओं का वैज्ञानिक प्रबंधन एवं चिकित्सा संबंधी ज्ञान प्राप्त कर सकें। साथ ही पशुपालकों को पशुधन स्वास्थ्य, उत्पादन तथा उत्पाद तकनीकी संबंधी फिल्में भी दिखायी जाती हैं।

पशुपालकों को वैज्ञानिकों की सलाह व जानकारी

पशुपालन संबंधी सामग्री का विक्रय

एटिक द्वारा पशुपालन संबंधी विभिन्न सामग्रियों का विक्रय भी किया जाता है। इसमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं।

पशुपालन संबंधी औषधि एवं दवाः पशुओं के विभिन्न रोगों के उपचार एवं स्वास्थ्य संबंधी अन्य समस्याओं के निवारण के लिए संस्थान ने अनेक औषधियां एवं दवाइयां विकसित की हैं। इनमें पशुओं के दस्त के उपचार के लिए आईवीआरआई एन्टीडायरियल औषधि, पशुधन एवं पालतू पशुओं में किलनी नियंत्रण हेतु एकेरीनाशी औषधि, पशुओं में एंटीबायोटिक रेसिस्टेंट किलनी प्रकोप के नियंत्रण के लिए औषधि, पशुओं में चर्म रोगों के लिए औषधि, लक्षणहीन थनैला की रोकथाम के लिए एक हर्बल औषधि (मैस्टिडिप), थनैला की रोकथाम एवं रोगमुक्ति के लिए मैस्टीक्यूअर, एवं खाज को ठीक करने के लिए मैंगोल ऑयल, दाद संक्रमण के लिए रिंगवर्म क्यूअर, त्वचा संबंधी सभी प्रकार की समस्याओं के लिए ऑलइनऑल मरहम, जले हुए घावों के लिए बर्न मरहम आदि प्रमुख हैं। ये औषधियां पशुपालक एटिक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

पशु आहार तकनीकियां/उत्पादः पशुओं को स्वस्थ रखने एवं पशुधन की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने के लिए अनेक पशु आहार तकनीकियां तथा उत्पाद विकसित किये गये हैं। इनमें से कुछ तकनीकियां एटिक द्वारा विक्रय हेतु उपलब्ध हैं :

- पशुचॉकलेट (यूरिया–शीरा–खनिज ब्लाक) : यह पशुधन के आहार में संपूरक का कार्य करने में मदद करता है। इसको रोज खिलाने से पशुओं में खनिज लवणों के अभाव से होने वाली बीमारियों एवं समस्याओं को रोका जा सकता है ।

- गाय एवं बछड़ों के लिए प्रोबायोटिक : इसके सेवन से युवा बछड़े–बछड़ियों में होने वाले दस्तों में उल्लेखनीय कमी आती है और उनका स्वास्थ्य बेहतर होता है । इसके प्रयोग से गायों में आहार ग्रहण करने एवं चारा चरने के लिए रूचि में बढ़ोतरी होती है और उनके शारीरिक भार में भी तेज वृद्धि होती है ।

- संपीडित (कस्प्रेस्ड) संपूर्ण आहार ब्लॉक : इस तकनीकी द्वारा भूसे आदि फसल अवशेषों व कृषि औद्योगिक उप–उत्पादों को रोमंथी पशुओं के लिए रूचिकर खाद्य सामग्री में परिवर्तित किया जा सकता है। यह तकनीकी दूरदराज के क्षेत्रों में, जहां परिवहन की समस्या है और पशु चारों की कमी है, विशेष रूप से अति उपयोगी है ।

- खनिजयुक्त यूरिया शीरा तरल संपूरक (एमयूएमएलएस) : यह एक तरल आहार है, जिसे पशुओं के सानी में आसानी से मिलाया जा सकता है। इससे यूरिया की विषालुता की आशंकाएं भी समाप्त हो जाती हैं। यह आहार कठिन/आपात परिस्थितियों में जब आहार की कमी होती है, जुगाली करने वाले पशु जैसे गाय, भैंस, भेंड़ एवं बकरी में अपूर्ण पोषकों की पूर्ति करता है।

पशु प्रजनन तकनीकियां एवं उत्पादः पशुपालन में प्रजनन संबंधी अनेक समस्याएं आती हैं जैसे बांझपन, गर्मी में न आना, बेल डालना, जेर न गिराना, गर्भाधान के बाद गर्भ नहीं ठहर पाना आदि। किसानों के लिए इस क्षेत्र में संस्थान द्वारा महत्वपूर्ण तकनीकियां विकसित की गयी हैं, जिनमें से कुछ एटिक में प्रदर्शन/विक्रय हेतु उपलब्ध हैं :

- उत्तम सांडों का जनित्रद्रव्य (वीर्य) : संस्थान उत्तम गाय (साहीवाल, वृदांवनी एवं थारपारकर) तथा मुर्रा भैंस के फ्रोजन वीर्य (सीमेन) स्ट्रा कृत्रिम गर्भाधान हेतु उपलब्ध कराता है। विभिन्न सरकारी, गैर–सरकारी संस्थाएं तथा पैरावेट एवं पशुपालक अपनी आवश्यकतानुसार इन्हें एटिक से खरीद सकते हैं ।

- पशुओं में अण्डोत्सर्गी गर्मी की पहचान के लिए आईवीआरआई क्रिस्टोस्कोप संयंत्र बाजार में कई नामों से उपलब्ध है–लाइकास्कोप, रैनस्कोप, हैरीस्कोप, लैबस्कोप एवं एचडीस्कोप। पशुपालक इस संयंत्र को बाजार से खरीद कर लाभ उठा सकते हैं। यह क्रिस्टोस्कोप एटिक में प्रदर्शन के लिए उपलब्ध है।

- गौवंश में प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए फर्टीस्योर–1 एक ऐसी तकनीक है जिसके उपयोग से पशुओं में बांझपन की समस्या को कम किया जा सकता है।

पशु फार्म उपकरण, मशीनरी एवं अन्य तकनीकियांः संस्थान में पशुधन उत्पादन में प्रयोग के लिए विभिन्न फार्म उपकरण, मशीनरी एवं अन्य तकनीकियां विकसित की गयी हैं। इनमें यूरिया शीरा खनिज ब्लॉक (यूएमएमबी) तैयार करने के लिए मशीन (पशु चोकोलेटर) पशुपालकों के लिए बहुत उपयोग सिद्ध हुई हैं। इसके अतिरिक्त गहाई के समय किसानों द्वारा बिना किसी अतिरिक्त व्यय के गेहूं के भूसे के अमोनीकरण के लिए थ्रेशर–सह–उपचार मशीन, जय गोपाल केंचुआ खाद, जिससे गोबर को वर्मीकम्पोस्ट में बेहतर ढंग से परिवर्तित करने के लिए देशी केंचुए का प्रयोग किया गया है, उल्लेखनीय है। एटिक द्वारा इन तकनीकियों का भी विक्रय किया जाता है। ■

विधि

कृत्रिम गर्भाधान से नस्ल सुधार कुछ सुझाव

संजय कुमार, रामेश्वर सिंह, हंसराज रजनी कुमारी, संजीव कुमार
आई.सी.ए.आर.–आर.सी.ए.आर., एस.जी.आई.डी.टी.,
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय,
बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय,
पटना

पशुपालन व्यवसाय को लाभकारक बनाने के लिए आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार कृत्रिम गर्भाधान करवाना जरूरी है। पशु संवर्धन में कृत्रिम गर्भाधान बहुत महत्व रखता है। कृत्रिम गर्भाधान के लिए वैज्ञानिक पद्धति से वीर्य का एकत्रीकरण, जांच, मूल्यांकन, संरक्षण एवं कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र तक परिवहन से पहुँचाना तथा गर्मी में आने योग्य मादा का चुनाव आदि कार्यों का विशेष महत्व है। कृत्रिम गर्भाधान का सफल उपयोग तथा उससे होने बाले अनेक लाभ के कारण दुनिया में प्रगतिशील देश इस पद्धति को पशु विकास योजना का मुख्य अंश मानते है। आज के समय में प्रगतिशील देश में 80 से 90 प्रतिशत पशु संवर्धन (Animal Breeding) कृत्रिम गर्भाधान से होता है।

भारत में दुधारू पशुओं की संख्या को ध्यान में रखते हुए एवं उनकी अधिकतम उत्पादन क्षमता का उपयोग करने के बावजूद सांड की संख्या कम बढ़ती है। इसलिए पशु संतान को सुधारने के लिए उपलब्ध सांड का अधिकतम उपयोग करने के लिए कृत्रिम गर्भाधान जरूरी है। प्रजनन संबंधी अनेक बीमारियों जैसे गर्भपात, ब्रुसेलोसिस तथा ट्राइकोमूलियोसिस आदि पर सफलतापूर्वक नियंत्रण कृत्रिम गर्भाधान से संभव है। छोटे किसान जिनके पास 5 से 10 पशु हैं, उनके लिए एक सांड रखना आर्थिक रूप से मंहगा पड़ सकता है। उनके लिए कम दाम में उत्तम प्रजनन सुविधा केवल कृत्रिम गर्भाधान के रूप में ही संभव है।

जिस पशु को कृत्रिम गर्भाधान के लिए लाया जाता है, उसका विशेष रूप से परीक्षण किया जाता है, जिससे

प्रजनन संबंधी रोगों का इलाज तथा उपचार, सही समय पर सही ढंग से किया जा सकता है। कृत्रिम गर्भाधान के द्वारा सैकड़ों मील दूर उत्तम संतान के सांड से प्रजनन संभव हो सकता है। यह कार्य अंतरराष्ट्रीय स्तर का हो, इसके लिए संतान सुधारने के कार्यक्रम में व्यापक रूप से विस्तार करने की आवश्यकता है। कुदरती ढंग से गर्भाधान की अपेक्षा कृत्रिम गर्भाधान में खर्चा बहुत कम होता है, जिसके लिए सरकार भी अपनी ओर से संतान सुधारने योजना के तहत मदद करती है।

लाभ ही लाभ

संतान सुधारने में कृत्रिम गर्भाधान का महत्वः हमारे देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन मुख्य आधार है। पशुओं द्वारा अधिक से अधिक आर्थिक लाभ लेना, उनके संतान, जाति तथा भ्रूण की आनुवंशिक क्षमता के ऊपर निर्भर करता है, जिसके कारण पशु विकास के क्षेत्र में संतान सुधारने के कार्य को खास प्राथमिकता दिया जाता है। इससे पशुओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है, जिससे अधिकतम लाभ मिल सकता है।

उत्तम पशु प्रजनन कैसे हो सकता हैः शुद्ध संतान, जिसकी उत्पादन क्षमता ज्यादा है, वैसे सांड से पैदा किये गये, बाछी एवं बाछा से अधिक क्षमता का होता है, जिससे सतत् पशु विकास के लिए हमेशा उत्तम संतान उच्च कोटि का सांड से प्रजनन कराना जरूरी है। इस कारण उच्च कोटि का पसंद किया हुआ कीमती सांड, बाछा का देखभाल तथा पालन–पोषण की जिम्मेदारी सरकार लेती है और उच्च कोटि के सांड/बाछा द्वारा उत्पन्न किये गये वीर्य से गायों/भैंसों में प्रजनन के लिए कृत्रिम गर्भाधान योजना को अमल में लाया जाता हैं।

उत्तम पशु प्रजनन के लिए कृत्रिम गर्भाधान पद्धति को अपनाने के लिए क्या–क्या जरूरतें हैंः कृत्रिम गर्भाधान द्वारा पशुओं में गर्भाधान करवाने के लिए कम संख्या में सांड/बाछी की जरूरत होती है। उच्च संतान के लिए उच्च कोटि का सांड/पाड़ा को पसंद करके, गाय/भैसों में कृत्रिम गर्भाधान करके, हजारों की संख्या में बच्चे पैदा किये जा सकते हैं। इन्हीं कारणों से कृत्रिम गर्भाधान पशुओं के विकास का मुख्य आधार माना जाता है। दुनिया के अधिकांश भाग में इस पद्धति से पशु विकास किया जाता है।

फ्रोजेन वीर्य का पशु विकास में महत्व

- फ्रोजेन वीर्य 10 से 15 वर्ष तक प्रवाही नाइट्रोजन वायु में सुरक्षित रखा जा सकता है, एवं पसंद किया गया सांड का 100 प्रतिशत उपयोग कर सकता है।
- फ्रोजेन वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या लगभग बराबर रहती है। प्रवाही वीर्य जो प्रतिदिन सांड से उपयोग में लाते हैं, जिसकी तुलना में फ्रोजेन वीर्य के शुक्राणुओं में कोई फर्क नहीं होता है। दोनों के शुक्राणुओं से गर्भ धारण करने की क्षमता समान होती हैं।
- फ्रोजेन वीर्य के उपयोग से सांड/बाछा का प्रोजेनी टेस्टिंग हो सकता है, इसलिए पशु विकास में फ्रोजेन वीर्य का उल्लेखनीय योगदान है।
- देश–विदेश में उच्च कोटि का सांड, जो उपलब्ध नहीं हो सकता वैसे, सांड का फ्रोजेन वीर्य प्राप्त कर उसका उपयोग पशु संवर्धन के लिए आसानी से कर सकते हैं। सांड के बीमार होने के बाद भी तथा उसके मरने के बाद भी पहले से एकत्रित किये गये फ्रोजेन वीर्य से प्रजनन कार्य जारी रख सकते हैं।

क्या सांड/बाछी कुदरती सेवा से अधिक पशु विकास संभव है ?

कृत्रिम सेवा की एक सांड/बाछा द्वारा एक वर्ष में 100 से 120 पशुओं में प्रजनन संभव हो सकता है। जबकि कुदरती सेवा से प्रजनन करवाने के लिए अधिक संख्या में सांड/बाछा की जरूरत होती है। इसके बाद भी सांड/बाछा उच्च कोटि का है या नहीं उसकी कोई गारंटी नही

है। इसके कारण उससे पैदा किया गया बच्चा उच्च कोटि का नहीं भी हो सकता है। जबकि उच्च कोटि का सांड/बाछा पसंद कर के कृत्रिम गर्भाधान पद्धति द्वारा प्रजनन करवाने से उच्च कोटि का हजारों की संख्या में बच्चा पैदा किया जा सकता है। इन बातों से स्पष्ट होता है कि कुदरती सेवा से अधिक पशुधन विकास समय पर संभव नही है, परन्तु कृत्रिम गर्भाधान से पशुधन विकास जल्दी एवं समय पर हो सकता है।

ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में कृत्रिम गर्भाधान योजना को सफल बनाएं

राज्यों में देशी गाय, भैंस, संकर संतान का महत्वपूर्ण स्थान है। इन संतानों को सुधारने हेतु पशु संवर्धन में कृत्रिम गर्भाधान का बहुत महत्व है। इसके लिए ग्रामीण स्तर पर एवं विभिन्न सहकारी डेरी के द्वारा कृत्रिम गर्भाधान को बढ़ावा देने की जरूरत है। कृत्रिम गर्भाधान योजना को सफल बनाने तथा अधिकतम लाभ लेने के लिए ग्रामीण पशुपालकों एवं उपकेन्द्र पर तैनात कर्मचारियों के बीच परस्पर बातचीत, घनिष्ठ संबंध तथा सम्पर्क कायम रखने के दृष्टि से निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए।

- केन्द्र अथवा उपकेन्द्र के कर्मचारियों के पास, गाँव के किसानों के पास उपलब्ध प्रजनन योग्य पशु विशेष की जानकारी मिले, इसके लिए जरूरी लिस्ट तैयार होनी चाहिए। इससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि किस किसान के पास कितने प्रजनन योग्य पशु हैं जिसमें कितने गर्मी में है और कितने खाली हैं।
- जो पशु गर्मी मे आया हुआ है, उसका कृत्रिम गर्भाधान द्वारा प्रजनन 14–16 घंटे के दौरान होना चाहिए।
- कृत्रिम गर्भाधान का लाभ आवश्यकता के अनुसार समय पर किसान केन्द्र पर पहुँचे तथा केन्द्र पर मौजूद कर्मचारियों के द्वारा समय से कृत्रिम गर्भाधान करने की व्यवस्था होनी चाहिए।
- कृत्रिम वीर्यदान करने के बाद पशु को सांड से अलग रखना चाहिए एवं दो दिनों तक चरने के लिए नही छोड़ना चाहिए एवं अलग रखने की व्यवस्था करनी चाहिए। जिससे दूसरा कोई सांड के संपर्क में ना आये।
- कृत्रिम गर्भाधान की तारीख नोट कर के रखनी चाहिए तथा 20 से 21 दिन के बाद पशु गर्मी में आता है, या नहीं। इसका किसान भाई को खास ध्यान रखना चाहिए। बहुत सारे किसान भाई मानते हैं कि एक बार कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद 100 प्रतिशत गाभिन होता है, परन्तु किसान भाई को इसका भी ख्याल रखना चाहिए कि अगर प्रथम बार में कृत्रिम गर्भाधान सफल नहीं होता है तो अगले 20 से 21 दिन बाद पशु अगर गर्मी में आती है तो कृत्रिम दुबारा गर्भाधान कराना चाहिए।
- जो गाय/भैस कृत्रिम गर्भाधान होने के बाद 20 से 24 दिनों में पुनः गरमी में नहीं आती, वैसे पशुओं को दो से तीन महीने बाद गर्भाधान के लिए परीक्षण करवाना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित हो जायेगा कि पशु गाभिन है या नही। इसके तहत आर्थिक नुकसान से किसानों को बचाया जा सकता है एवं समय पर गर्भाधान की जानकारी सहायक सिद्ध हो सकती है।
- जिस पशु में गर्भाधान हो चुका है, उसकी उचित देखभाल, पालनपोषण तथा जरूरी रख–रखाव के बारे में जानकारी, पशुपालक भाइयों को पशु नियंत्रण केन्द्र के कर्मचारी के पास से लेनी चाहिए।
- जिस पशु में गर्भाधान नहीं हुआ एवं गर्मी में नहीं आता, वैसे पशुओं को गरमी में लाने के लिए जरूरी इलाज पशु चिकित्सक के पास से समय पर कराना चाहिए।
- जहाँ कृत्रिम वीर्यदान की सुविधा उपलब्ध है, वहां के गाँवों में सांड़ तथा दो साल से ऊपर के तमाम बाछा संपर्क में ना आयें वैसे पशुओं का बंध्याकरण कराना चाहिए। आस–पास के गांवों में प्रजनन योग्य सांड नहीं होना चाहिए। ■

हिसार में नौवां एशियाई भैंस सम्मेलन - 2018

इन्द्रजीत सिंह
केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान
हिसार (हरियाणा)

भाकृअनुप के अंतर्गत केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार में एशियन बफैलो एसोसिएशन तथा इंडियन सोसायटी फॉर बफैलो डेवलपमेंट ने मिलकर 1–4 फरवरी, 2018 को नौवे एशियाई भैंस सम्मेलन का आयोजन किया। भारत में 2003 के बाद इस वर्ष इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस बार का सम्मेलन टिकाऊ आजीविका के लिए जलवायु स्मार्ट भैंस उत्पादन पर आधारित था। जलवायु परिवर्तन को दुनिया भर में खेती प्रणालियों के लिए एक बड़ा खतरा माना गया है जिससे पशुधन, विशेष रूप से भैंस उत्पादन, पर गहरा असर पड़ेगा। ध्यान रहे कि भारत में कुल दूध का 50 प्रतिशत के लगभग भैंस से आता है। इसके अलावा भैंस का मांस हमारे देश से निर्यात होने वाला सबसे बड़ा कृषि उत्पाद है ।

सम्मेलन का उद्घाटन 1 फरवरी, 2018 को राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के माननीय अध्यक्ष डॉ. हर्श कुमार भनवाला ने किया। नाबार्ड देश में जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को संबोधित करने वाला प्रमुख संगठन है। डॉ. भनवाला ने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन को पशुधन क्षेत्र के विकास के लिए एक बड़ी चुनौती माना। भैंसों को देश के लिए वरदान बताते हुए डेयरी उद्योग के लिए इन पशुओं को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचाने के लिए जरूरी कदम उठाने की जरूरत पर बल दिया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पशु विज्ञान एवं मत्स्य पालन उपमहानिदेशक डॉ. जे. के. जेना तथा भारत सरकार के पशुपालन आयुक्त डॉ. एस. एस.

मुख्य अतिथि द्वारा भैंस मेले का भ्रमण

होन्नप्पागोल ने उद्घाटन सत्र में अपने संबोधन में किसानों तथा ग्रामीण इलाकों के स्थायी विकास और खुशहाली के लिए जलवायु परिवर्तन की चिंताओं को दूर करने के लिए पशु वैज्ञानिकों का आहवान किया। इस संबंध में उन्होंने केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की ।

सम्मेलन के चौथे दिन (04 फरवरी) एक भव्य भैंस मेले तथा किसान–वैज्ञानिक–उद्योग वार्ता का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन हरियाणा के कृषि विकास एवं पंचायत, खान व भूविज्ञान और पशुपालन एंव दुग्ध, मत्स्यपालन मंत्री श्री ओम प्रकाश धनकड़ ने किया। इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने इस तथ्य पर गर्व महसूस किया कि दुनिया की सबसे अच्छी नस्ल की भैंस मुर्राह इस प्रदेश से संबंध रखती है और इसमें केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान का प्रशंसनीय योगदान है। सम्मेलन में एएसआरबी. के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव ने किसान–वैज्ञानिक–उद्योग वार्ता की अध्यक्षता की और अपने विचार रखे।

इस चार दिवसीय सम्मेलन में बारह देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया – श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, ब्राजील, बुल्गारिया, कोलंबिया, इटली, नाइजीरिया, ग्वाटेमाला, अमेरिका, ब्रिटेन तथा भारत। शोधकर्ताओं, प्रजनकों, किसानों, उद्योग विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और दुनिया भर के विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों, शोध परिणामों और भैंस उत्पादन प्रणालियों के विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श किया तथा भविष्य के दिशा–निर्देशों के लिए नीति निर्धारित की जिससे जलवायु परिवर्तन से भैंस पालन को सुरक्षित रखा जा सके। इस सम्मेलन में हरियाणा किसान आयोग के अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार यादव ने भी अपने विचार रखे तथा केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार के निदेशक डॉ. इन्द्रजीत सिंह को सम्मेलन के सफल आयोजन पर बधाई दी। इस प्रकार के आयोजन पशुपालकों को एक नई राह दिखाते हैं। ■

सम्मेलन की मुख्य सिफारिशें

1. भविष्य में जलवायु परिवर्तन व बढ़ते तापमान के प्रभाव के कारण भैंस की उत्पादकता में होने वाली कमी को दूर करने के लिए मौसम अनुकूल चारे की प्रजातियों की खोज व उनका वितरण तथा किसानों में जागरूकता लाना आवश्यक है।
2. भूमण्डलीकरण के दौर में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संबन्धों को विकसित करना अतिआवश्यक है जिससे भैंसों में होने वाले रोगों पर शोध तथा भैंस के जर्मप्लाज्म के अदान–प्रदान में सहयोग व विकास पर बल दिया जा सके।
3. भैंसों में नस्ल सुधार व उत्थान के लिए अनुत्पादक पशुओं की छंटनी व मांस के लिए ऐसे पशुओं का प्रयोग व सरल मांस निर्यात की व्यवस्था हो जिससे किसान लाभान्वित हो सकें।
4. भैंस उत्पादन के लिए जनन, प्रजनन, पोषण, प्रबंधन व रोग विज्ञान की आधुनिक तकनीक विकसित करने व किसानों द्वारा अपनाने की आवष्यकता है।
5. आधुनिक सूचना संचार तकनीक द्वारा भैंस पालन व संबंधित व्यापार की समस्त जानकारी, सभी पशुओं का रजिस्ट्रेशन व रिकार्ड तथा किसानों की आय बढ़ाने के लिए सामूहिक स्तर पर आपसी सहयोग व सभी सरकारी संस्थाओं का आपसी समन्वय जरूरी है।

AYURVET

जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी

रुचामैक्स
दूर करे परेशानी

सेहत से समृद्धि

रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

महीने में दें सात दिन,
दूध पायें रात दिन

एक्सापार
जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए

चर्मिल प्लस
विभिन्न चर्म रोगों के लिए

कीटोरोक
कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

अधिक जानकारी के लिए
टोल फ्री नं० पर मिस्ड कॉल करें

97803 11444

AYURVET
आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान

RNI No.: DELHIN/2017/74023

एशिया का सबसे बड़ा मिल्क ब्रांड

खुला दूध गंदा और सेहत के लिए हानिकारक होता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज़्ड पाउच दूध. यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है, इसलिए यह इंसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

Follow us: /amul.coop | /amul_coop | /amultv | /amul_india | Visit us at http://www.amul.com

10824579HIN

प्रकाशक व मुद्रक नरेश कुमार भनोट द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट, ए–89 / 1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन, आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना